कठिनाइयों की कसौटी पर खरे उतरें

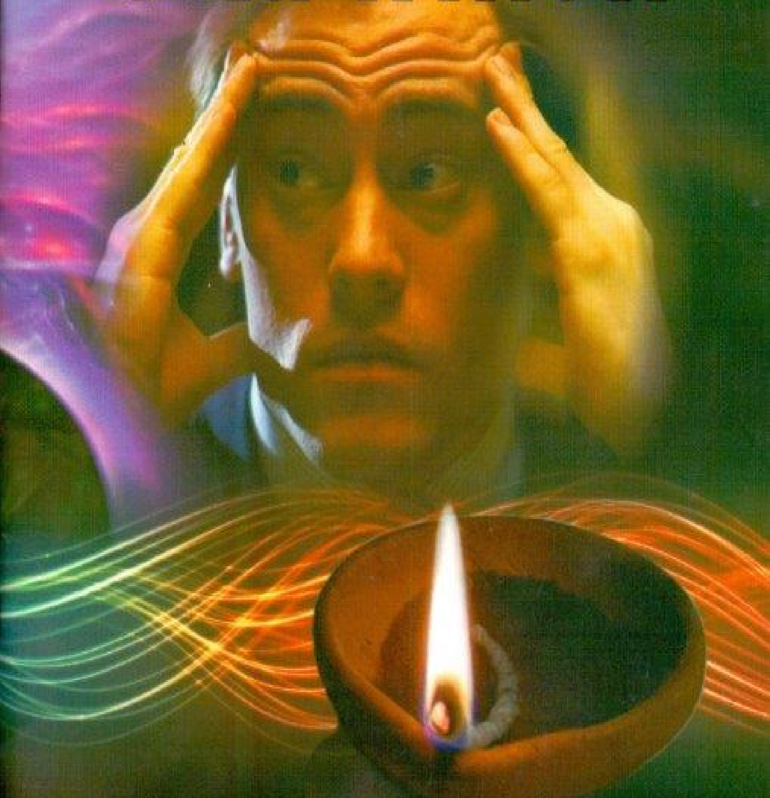

—श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि
मथुरा (उ० प्र०)

लेखक
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

पुनरावृत्ति सन् २०१२

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विषय सूची

पृष्ठ सं.

१. कठिनाइयों की कसौटी से कतराइए मत	५
२. कसौटी से कतराइए मत	९
३. सुख ही सुख क्यों? दुःख क्यों नहीं?	१२
४. भवितव्यता से भयभीत न हों	१६
५. एकांगी बनकर अपूर्ण न रह जाएँ	२०
६. अपने शत्रु आप न बनें	२७
७. सचाई को जानें और आगे बढ़ें	३३
८. उतार-चढ़ावों से उद्विग्न न हों	४०
९. दुःख करने से लाभ क्या?	४४
१०. धैर्यवान पुरुषसिंह	४६
११. भाग्य को बुरा मत कहिए	४८
१२. हारिए मत, जीतने की ही बात सोचिए	५१
१३. परिवर्तन के साथ सामंजस्य बिठाना सीखें	५६

**

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कठिनाइयों की कसौटी पर खरे उतरें

कठिनाइयों की कसौटी से कतराइए मत

सृष्टि–संचालन के सार्वभौम नियमों के अनुसार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन होते रहना एक स्वाभाविक बात है। दिन के बाद रात और रात के बाद दिन होता है। वर्षा के बाद शरद और इसके पश्चात ग्रीष्म ऋतु का आगमन भी निश्चय ही होता है। सूर्य, चंद्र एवं अन्य ग्रह भी एक नियमबद्ध गति में चलते हैं। इसी तरह मानव जीवन भी इन सार्वभौम नियमों के अंतर्गत सदैव एकसा नहीं रहता। मनुष्य की इच्छा हो या न हो, जीवन में भी परिवर्तनशील परिस्थितियाँ आती रहती हैं। आज उतार है तो कल चढ़ाव। चढ़े हुए गिरते हैं और गिरे हुए उठते हैं। आज उँगली के इशारे पर चलने वाले अनेक अनुयायी हैं तो कल सुख–दुःख की पूछने वाला एक भी नहीं रहता। रंक कहाने वाला एक दिन धनपति बन जाता है तो धनवान निर्धन बन जाता है। जीवन में इस तरह की परिवर्तनशील परिस्थितियाँ आते–जाते रहना नियतिचक्र का सहज स्वाभाविक नियम है। इनसे बचा नहीं जा सकता, इन्हें टाला नहीं जा सकता।

एकांगी विचारप्रेरित मनुष्य इस नियति के विधान को नहीं समझ पाता। वह अपनी इच्छा–कामना के अनुकूल परिस्थितियों में ही सुख का अनुभव करता है तो विपरीत परिस्थितियों में दुखी हो जाता है। अधिकांश व्यक्ति सुख, सुविधा, संपन्नता, लाभ, उन्नति आदि में प्रसन्न और सुखी रहते हैं किंतु दुःख, कठिनाई, हानि आदि में दुखी और उद्विग्न हो जाते हैं। किंतु यह मनुष्य के एकांगी दृष्टिकोण का परिणाम है और इसी के कारण कठिनाई, मुसीबत, कष्ट आदि शब्दों की रचना हुई। वस्तुतः परिवर्तन मानव जीवन में उतना ही महत्त्वपूर्ण, सहज और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वाभाविक है जितना रात और दिन का होना—ऋतु का बदलना—आकाश में ग्रह–नक्षत्रों का विभिन्न स्थितियों में गतिशील रहना। किंतु केवल सुख, लाभ, अनुकूल परिस्थितियों की ही चाह के एकांगी दृष्टिकोण के फलस्वरूप मनुष्य दुःख, कठिनाई और विपरीतताओं में रोता है, दूसरों को अथवा ईश्वर को अपनी विपरीतताओं के लिए कोसता है। शिकायत करता है, इनसे बचने के लिए कोसता है। वह सदा ही इनसे बचने के लिए असफल प्रयत्न करता है। किंतु इससे तो उसकी समस्याएँ बढ़ती ही जाती हैं, घटती नहीं। वस्तुतः कठिनाइयाँ जीवन का एक आवश्यक नियम है, जिन्हें स्वीकार करने में ही लाभ है।

कठिनाइयाँ जीवन की एक सहज–स्वाभाविक स्थिति है, जिन्हें स्वीकार करके मनुष्य अपने लिए उपयोगी बना सकता है और कठिनाइयों को जीवन का विरोधी भाव मानकर उनसे दुखी और परेशान होकर मनुष्य अपनी ही हानि भी कर लेता है। कठिनाइयों में रोना, हार मान लेना, निराशा और अवसाद से ग्रस्त होना अपने विश्वास के मार्ग को छोड़ बैठना ही है। वस्तुतः कठिनाइयाँ इतनी भयंकर और कष्टदायक नहीं हैं, जितना बहुत से लोग समझते हैं। जिन कठिनाइयों में कई व्यक्ति रोते हैं, मानसिक क्लेश अनुभव करते हैं, उन्हीं कठिनाइयों में दूसरे व्यक्ति नवीन प्रेरणा, नव उत्साह पाकर सफलता का वरण करते हैं। इस तरह कठिनाइयाँ अपने आप में कुछ नहीं हैं वरन मन की स्थिति से ही इनका स्वरूप बनता है। मन और कठिनाइयाँ सापेक्ष हैं। सबल मन वाला व्यक्ति बड़ी कठिनाई को भी स्वीकार करके आगे बढ़ता है तो निर्बल मन वाला सामान्य सी कठिनाई में भी निश्चेष्ट हो जाता है। निर्बल मन तो अपनी कल्पनाजन्य कठिनाइयों में ही अशांत हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नियति के नियम अजेय एवं अपरिवर्तनीय हैं। मानव जीवन में होने वाले परिवर्तन भी इसी के अंतर्गत होने से ध्रुव सत्य हैं। जीवन में आने वाली कठिनाइयों की जड़ में भी यही है। इस तथ्य को हृदयंगम कर कठिनाइयों में भी संतुष्ट, संतुलित रहने वालों की जीवनयात्रा सहज-गति में चलती रहती है। अनेक विपरीतताएँ भी उनका मार्ग नहीं रोक पातीं। छोटी-बड़ी कठिनाइयाँ उनके लिए इसी तरह महत्त्व रखती हैं जैसे रात और दिन, सरदी और गरमी।

परीक्षा की कसौटी पर प्रतिष्ठित हुए बिना कोई भी वस्तु उत्कृष्टता प्राप्त नहीं कर सकती, न उनका कोई मूल्य ही होता है। सोना भीषण अग्नि में तपकर ही शुद्ध और उपयोगी होता है। कड़ी धूप में तपने पर ही खेतों में खड़ी फसल पकती है। आग की भयानक गोद में पिघलकर ही लोहा साँचे में ढलने के उपयुक्त बनता है। जन-जन द्वारा पूजी जाने वाली मूर्ति पर पैनी छैनी की असंख्य चोटें पड़ती हैं। परीक्षा की अग्नि में तपकर ही वस्तु शक्तिशाली, सौंदर्ययुक्त और उपयोगी बनती है। मनुष्य भी कठिनाइयों में तपकर उत्कृष्ट, सौंदर्ययुक्त, प्रभावशाली और महत्त्वपूर्ण बनता है। जीवन को अधिक उत्कृष्ट और महत्त्वपूर्ण बनाने के लिए मनुष्य को उतनी ही अधिक कठिनाइयों और परेशानियों में से गुजरना पड़ेगा। वस्तुतः कठिनाइयाँ, दुःख, परेशानियाँ जीवन की कसौटी हैं, जिनमें मनुष्य के व्यक्तित्व का रूप निखरता है।

कठिनाइयाँ मनुष्य के विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इन्हें खुले हृदय से स्वीकार करके मानसिक विकास प्राप्त किया जा सकता है। कठिनाइयों में खुलकर खेलने से इच्छाशक्ति प्रबल होती और बड़े-बड़े काम करने की क्षमता प्राप्त होती है। कठिनाइयों में मनुष्य की आंतरिक शक्तियाँ एकत्रित और संगठित होकर काम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करती हैं। जीवन की कोई भी साधना कठिनाइयों में होकर निकलने पर पूर्ण होती है। कठिनाइयों में ही जीवन दर्शन की परीक्षा होती है।

कठिनाइयाँ दुधारी तलवार हैं। जो व्यक्ति इनसे घबराकर गिर पड़ा, वह हार बैठा। वह अपने जीवन की सभी संभावनाओं को नष्ट कर देता है। इसके विपरीत जिसने कठिनाइयों को साधकर उनसे समझौता-समन्वय कर लिया, वह व्यक्ति कठिनाइयों को ही अपनी सफलता, उत्कृष्टता का साधन बना लेता है। कठिनाइयाँ एक ओर जीवन में कसौटी बनकर सुधार, नवनिर्माण, उत्थान की प्रेरणा देने में, उत्साह और मनोबल को ऊँचा उठाने में सहायक होती हैं तो दूसरी ओर मनुष्य को अकर्मण्य, निरुत्साह बना देती हैं। जीवन की आशा, उमंगों को धराशायी कर देती हैं। दोनों ही स्थितियों का उत्तरदायी मनुष्य स्वयं ही होता है। इनमें कठिनाइयों का कोई दोष या गुण नहीं है। जब मनुष्य कठिनाइयों की यथार्थता को नहीं समझता, उन्हें जीवन का स्वाभाविक अंग मानकर सहर्ष स्वीकार नहीं करता तो ये ही कठिनाइयाँ अपार दुःख, अशांति, क्लेश का कारण बन जाती हैं, भय और घबराहट पैदा हो जाते हैं—इससे मनुष्य का मानसिक संतुलन संगठन बिखर जाता है और अंतर्द्वंद्व पैदा हो जाते हैं। जब किसी राष्ट्र की आंतरिक शक्तियाँ विघटित होकर उनमें अंतर्द्वंद्व गृहयुद्ध पैदा हो जाता है तो उसका पतन होना स्वाभाविक है। उस पर बाह्य आक्रमण भी होने लगते हैं। फिर सामान्य सी कठिनाइयाँ भी मनुष्य की आशा, उमंग और धैर्य को घायल कर उसे निराशा, हीनता, अवसाद की ओर ढकेलती हैं। मनुष्य की बड़ी-बड़ी आशाएँ, उमंगें, अभिलाषाएँ इस स्थिति में कठिनाइयों की चट्टान से टकराकर टूट-फूट जाती हैं, छिन्न-भिन्न हो जाती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसी तरह मनुष्य चाहे तो कठिनाइयों को वरदान बना सकता है और अभिशाप भी। आवश्यकता इस बात की है कि वह बार-बार प्रयत्न करके कठिनाइयों की कसौटी में सफल होने के प्रयास न छोड़े, अपनी साधना जारी रखे।

कसौटी से कतराइए मत

किसी उद्देश्य के लिए जीवनभर कठिनाइयों से जूझते रहना ही महापुरुष होना है। कठिनाइयों से गुजरे बिना कोई भी अपने लक्ष्य को नहीं पा सकता। विद्वानों का कहना है कि जिस उद्देश्य का मार्ग कठिनाइयों के बीच नहीं जाता उसकी उच्चता में संदेह करना चाहिए।

ऐसी नहीं कि संसार के सारे महापुरुष असुविधापूर्ण परिस्थिति में ही जन्मे और पले हों। ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं, जिनका जन्म बहुत ही संपन्न स्थिति में हुआ और जीवनभर संपन्नतापूर्ण परिस्थिति में ही रहे। यदि वे चाहते तो कठिनाइयों से बचकर भी बहुत से कार्य कर सकते थे। किंतु उन्होंने वैसा नहीं किया। जो असुविधापूर्ण परिस्थितियों में रहे उन्हें तो कठिनाइयों का सामना करना ही पड़ा, साथ ही जिन्हें किसी प्रकार की असुविधा नहीं थी उन्होंने भी कठिन कामों को हाथ में लेकर कठिनाइयों को इच्छापूर्वक आमंत्रित किया।

वास्तव में बात यह है कि कठिनाइयों के बीच से गुजरे बिना मनुष्य का व्यक्तित्व अपने पूर्ण चमत्कार में नहीं आता और न सुविधापूर्वक पाया हुआ ही किसी को पूर्ण संतोष देता है। कठिनाइयाँ एक ऐसी खराद की तरह हैं जो मनुष्य के व्यक्तित्व को तराशकर चमका दिया करती हैं। कठिनाइयों से लड़ने और उन पर विजय प्राप्त करने से मनुष्य में जिस आत्मबल का विकास होता है, वह एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अमूल्य संपत्ति होती है जिसको पाकर मनुष्य को अपार संतोष होता है। कठिनाइयों से संघर्ष पाकर जीवन में एक ऐसी तेजी उत्पन्न हो जाती है जो पथ के समस्त झाड़-झंखाड़ों को काटकर दूर कर देती है। एक चट्टान से टकराकर बढ़ी हुई नदी की धारा मार्ग के दूसरे अवरोध को सहज ही पार कर जाती है।

अपने व्यक्तित्व को पूर्णता की चरमावधि पर पहुँचाने के लिए ही भारतीय ऋषि-मुनियों ने तपस्या का कष्टसाध्य जीवन अपनाया। घर की सुख-सुविधाओं को छोड़कर अरण्य-आश्रमों का कठिन जीवन स्वीकार किया। हर आर्य गृहस्थ का धार्मिक कर्त्तव्य रहा है कि वह जीवन का अंतिम चरण सुख-सुविधाओं को त्यागकर कठिन परिस्थितियों में व्यतीत करने के लिए वानप्रस्थ तथा संन्यास ग्रहण किया करता था। भारतीय आश्रम धर्म के निर्माण में एक उद्देश्य यह भी रहा है कि घर-गृहस्थी में सुख-सुविधाओं के बीच रहते-रहते मनुष्य के व्यक्तित्व में जो निस्तेजता और ढीलापन आ जाता है, वह संन्यस्त जीवन की कठोरता से दूर हो जाए और व्यक्ति अपने परलोक साधना के योग्य हो सके। कठिनाइयाँ मनुष्य को धमकाने और उसे तेजवान बनाने के लिए ही आती हैं। कठिनाइयों का जीवन में वही महत्त्व है जो उद्योग में श्रम का और भोजन में रस का।

जीवन को अधिकाधिक कठोर और कर्मठ बनाने में कठिनाइयों की जिस प्रकार आवश्यकता है, उसी प्रकार चरित्र-निर्माण के लिए भी कठिनाइयों की उपयोगिता है। मनुष्य का सहज स्वभाव है कि उसे जितनी ही अधिक छूट मिलती है, सुख-सुविधाएँ प्राप्त होती हैं वह उतना ही निकम्मा और आलसी बनता जाता है और एक प्रमादपूर्ण जीवन संसार की सारी बुराइयों और व्यसनों का जन्मदाता है। खाली और निठल्ला बैठा हुआ व्यक्ति सिवाय खुराफात करने के और क्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर सकता है। यही कारण है कि उत्तराधिकार से सफलता पाए हुए व्यक्ति अधिकतर व्यसनी और विलासी हो जाते हैं।

किंतु जो कठिनाइयों से जूझ रहा है, परिस्थितियों से टक्कर ले रहा है, असुविधाओं को चुनौती दे रहा है, उसे संसार की फजूल बातों के लिए अवकाश कहाँ? उसके लिए एक-एक क्षण का मूल्य है, जीवन की एक-एक बूँद का महत्त्व है। जिस प्रकार मोर्चे पर डटे हुए सैनिकों की साहस और उत्साह की वृत्तियों के अतिरिक्त अन्य सारी वृत्तियाँ सो जाती हैं, उसी प्रकार कठिनाइयों के मोर्चे पर अड़े हुए व्यक्ति की समस्त अभावपूर्ण वृत्तियाँ सो जाती हैं।

कष्ट और कठिनाइयों को जो व्यक्ति विवेक और पुरुषार्थ की कसौटी समझकर परीक्षा देने में नहीं हिचकते, वे जीवन की वास्तविक सुख-शांति को प्राप्त कर लेते हैं। किंतु जो कायर हैं, क्लीव हैं, आत्मबल से हीन हैं, वे इस परीक्षाबिंदु को देखकर डर जाते हैं, जिनके फलस्वरूप 'हाय-हाय' करते हुए जीवन के दिन पूरे करते हैं। न उन्हें कभी शांति मिलती है और न सुख। सुखों का वास्तविक सूर्य दुःखों के घने बादलों के पीछे ही रहता है। जो इन बादलों को पार कर सकता है, वही उसके दर्शन पाता है। जो दुःखों के गंभीर बादलों की गड़गड़ाहट से भयभीत होकर दूर खड़ा रहता है, वह जीवनभर सुख-सूर्य के दर्शन नहीं कर सकता। वास्तविक सुख को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि संसार के दुःखों का झूठा परदाफाश किया जाए। शीतलता का सुख लेने के लिए गरमी को सहन करना ही होगा।

केवल मात्र सुख-सुविधाओं से भरा जीवन अधूरा है। जब तक मनुष्य दुःखों का अनुभव नहीं करता, कष्टों को नहीं सहता, वह अपूर्ण ही रहता है। मनुष्य की पूर्णता के लिए दुःख-तकलीफों का होना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवश्यक है। दुःखों की आग में तपे बिना मनुष्य के मानसिक मल दूर नहीं होते और जब तक मल दूर नहीं होते मनुष्य अपने वास्तविक रूप में नहीं आ पाता।

इसके अतिरिक्त कष्ट-क्लेशों का सबसे महत्त्वपूर्ण उपयोग यह है कि उनके आगमन पर गरीब को बड़ी तीव्रता से ईश्वर की याद आती है। दुःख की तीव्रता मनुष्य में ईश्वरीय अनुभूति उत्पन्न कर उसके समीप पहुँचा देती है। कष्ट और क्लेशों के रूप में मनुष्य अपने संचित कर्मफलों को भोगता हुआ शनैः शनैः परलोक का पथ प्रशस्त किया करता है। जहाँ दुःख की अनुभूति नहीं, वहाँ ईश्वर की अनुभूति असंभव है। यही कारण है कि भक्तों ने ईश्वर के समीप रहने के साधन रूप दुःख को सहर्ष स्वीकार किया है।

कष्ट और कठिनाइयों को दुःखमूलक मानकर जो इससे भागता है उसे यह दुःख रूप में ही पीछे लग जाती है और जो बुद्धिमान इन्हें सुखमूलक मानकर इनका स्वागत करता है, उनके लिए यह देवदूतों के समान वरदायिनी होती है।

सुख ही सुख क्यों? दुःख क्यों नहीं?

मानव जीवन संघर्षपूर्ण है। जीवन में नित्य ही नए-नए उतार-चढ़ावों का सामना करना पड़ता है। सुख-दुःख, लाभ-हानि, प्रसन्नता-अप्रसन्नता, जन्म-मरण आदि द्वंद्व जीवन में आते-जाते रहते हैं। लेकिन हम केवल सुख, प्रसन्नता, लाभ, सफलता की ही आकांक्षा रखते हैं। इसके विपरीत दुःख, कठिनाइयों, परेशानियों, समस्याओं से हम कतराते हैं। उनसे घबराकर उनकी कल्पना भी जीवन में नहीं करना चाहते, किंतु हममें से प्रत्येक को अपनी इच्छा के विरुद्ध भी जीवन में इनका सामना करना ही पड़ता है। उस स्थिति में हममें से बहुत से रोने लगते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। चिंता, शोक, क्लेश, अशांति में घुल-मिलकर असमय में ही जीवन नष्ट कर लेते हैं। दूसरे ऐसे भी लोग होते हैं जो इन कठिनाइयों को ही अपने विकास, उत्थान, महानता तथा प्रगति का साधन बना लेते हैं। महर्षि व्यास ने कहा है—"क्षुद्रमना लोग ही दुःख के वशीभूत होकर तप, तेज की इस शक्ति को नष्ट कर लेते हैं। किंतु पुरुषार्थी, महामना लोग कष्टों को भी अपनी सफलता और विकास का आधार बना लेते हैं।"

रोना-धोना, शोक करना, चिंता-विषाद में खिन्न हो बैठना, हार मान लेना, कठिनाइयों-दुःखों का कोई समाधान नहीं है। ऐसी स्थिति में तो कठिनाइयाँ सुरसा की तरह बढ़कर समस्त जीवन को ही छिन्न-भिन्न कर देती हैं। यह भी निश्चित है कि जीवन के साथ दुःख और कठिनाइयाँ सदैव रहे हैं और रहेंगे। इनसे कभी छुटकारा नहीं पाया जा सकता। छांदोग्य उपनिषद्कार ने कहा है—"**नहि वै सशरीरस्य सतः प्रियाप्रिययोरपद्धतिरस्ति।**" अर्थात निश्चय ही जब तक यह शरीर बना हुआ है, तब तक सुख और दुःख निवारण नहीं हो सकते। कठिनाइयाँ जीवन का उसी तरह एक अनिवार्य अंग हैं, जिस तरह रात्रि का होना, ऋतुओं का बदलते रहना।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि कठिनाइयों के रहते हुए भी आगे बढ़ा जाए। इन्हें जीवन को विकसित और महान बनाने का आधार क्यों न बना लिया जाए! हार मान बैठने पर तो ये हमें मटियामेट ही कर देंगी। दृढ़ साहस-निष्ठा से काम लेने पर अविचल भाव से अपने पथ पर बढ़ते रहने से ये समस्याएँ ही मनुष्य की सहायक और सहयोगी बन जाती हैं। स्मरण रखिए, उन्नति एवं सफलता का मार्ग कष्ट एवं मुसीबतों के कंकड़-पत्थरों से ही बना है। प्रत्येक महान बनने वाले व्यक्ति को इसी मार्ग का अवलंबन लेना पड़ता है। जिस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तरह विष को शुद्ध करके अमृत के गुण प्राप्त कर लिए जाते हैं उसी प्रकार कठिनाइयों का भी शोधन कर इन्हें आत्मोत्थान का आधार बनाया जा सकता है।

कठिनाइयाँ एक रूप में उस स्थिति का नाम हैं, जहाँ मनुष्य अपना पूरा-पूरा समाधान प्राप्त नहीं कर पाता। 'क्या करूँ, क्या न करूँ' का निर्णय नहीं कर पाता। ऐसी स्थिति में एक रास्ता तो उन लोगों का है जो रो-रोकर, शोक करके, चिंता, विषाद में डूबकर अपना समय बिताते हैं। दूसरे प्रकार के व्यक्ति वे होते हैं जो समस्या के समाधान में अधिक मनोयोगपूर्वक विचारमग्न होते हैं। समाधान जल्दी ही मिले इसके लिए व्यस्त रहते हैं। यही मार्ग उत्तम है। कठिनाइयों में रोने के बजाय उनके समाधान का मार्ग ढूँढ़ना ही रोग का सही इलाज है। रोगी को औषधि न देकर, उसके इलाज की व्यवस्था न करके रोग और औषधि के लिए रोते रहने से तो संकट बढ़ेगा ही। इसलिए संकट के समय अपने समस्त बुद्धि-विवेक और प्रयत्नों को इनके हल करने में लगा देना चाहिए। इससे तीन लाभ होंगे—(१) जब समस्त शक्तियाँ एकाग्र होकर किसी एक क्षेत्र में काम करेंगी तो संतोषजनक समाधान भी मिलेगा। साथ ही शक्तियाँ अधिक सूक्ष्म और विकसित होंगी। (२) बुद्धि, विवेक, अनुभव बढ़ेंगे। (३) मनुष्य के व्यस्त रहने से कठिनाइयों के प्रति शोक, चिंता एवं उद्विग्नता में डूबने के लिए कोई समय ही नहीं मिलेगा। स्वामी विवेकानंद ने लिखा है—"व्यस्त मनुष्य को आँसू बहाने के लिए कोई समय नहीं रहता।"

कठिनाइयाँ एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत व्यक्ति सुदृढ़, प्रबुद्ध एवं अनुभवी बनता है। प्रारंभिक कठिनाइयाँ मनुष्य को बहुत ही भयंकर जान पड़ती हैं, किंतु धीरे-धीरे वही व्यक्ति कठिनाइयों में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पलते-पलते इतना दृढ़ एवं परिपक्व हो जाता है कि जिन स्थितियों में वह भयभीत रहा करता था, चिंता और विषाद में डूबा रहता था उन्हीं स्थितियों में वह बेधड़क हो जीवनपथ पर चलने लगता है।

आप कठिन परिस्थितियों से घबराएँ नहीं, न इनसे शोकातुर ही हों। ये तो आपके जीवन को विकसित-परिपुष्ट बनाने के लिए आती हैं। सोना तपकर ही निखरता है। इसी तरह मनुष्य का जीवन भी कठिनाइयों में पलकर ही खिलता है।

कठिनाइयाँ जीवन की कसौटी हैं, जिनमें हमारे आदर्श, नैतिकता एवं शक्तियों का मूल्यांकन होता है। दुःख और कठिनाइयाँ ही जीवन का एक ऐसा अवसर है, जिसमें मनुष्य अपने आंतरिक जीवन की ओर अभिमुख होता है। सुखद परिस्थितियों में और तो और मनुष्य अपना आपा भी भूल जाता है। सुख की मादकता-मस्ती में मनुष्य के बुद्धि, विवेक, विचारशीलता, नीति एवं सदाचार तिरोहित हो जाते हैं। इसीलिए महाभारत में वेदव्यास ने लिखा है—"दुःख में ही दुखियों के प्रति हमदर्दी पैदा होती है और मनुष्य भगवान का चिंतन करता है। सुख में मनुष्य का हृदय संवेदनारहित कठोर बन जाता है और मनुष्य ईश्वर तक को भूल जाता है।" दुःखों में ही अपने बुरे-भले का विचार कर सकने का विवेक पैदा होता है। रहीम जी ने कहा है—

रहिमन विपदा हू भली, जो थोड़े दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानपरत सब कोय॥

जब मनुष्य सुख की नींद में सोया रहता है तो अपने जीवन के शाश्वत लाभ तथा संसार में अपने कर्त्तव्य को भूला रहता है। किंतु दुःख का झटका उसे इस नींद से जगाता है और मनुष्य को क्या करना है? वह किसलिए आया है? संसार में उसका क्या कर्त्तव्य-धर्म है?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसका पाठ मजबूरन सिखाता है। दु:ख के झकझोर डालने पर जब हम अपने ध्येय और कर्त्तव्य में एकाग्र होकर लग जाते हैं, जीवन को सक्रिय बना लेते हैं तो वही दु:ख कालांतर में सुखद परिणाम लेकर आता है। आंतरिक-बाह्य जीवन में सुख का संचार होता है। दु:ख, सुखों का संदेश लेकर आता है, यह कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

भवितव्यता से भयभीत न हों

शरीरधारी की सबसे बड़ी विशेषता ही यह है कि उसे सुख और दु:ख दोनों के बीच से गुजरना पड़ता है। शरीर-सुख और दु:ख दोनों को भोगने के लिए मिलता है। जीव ने पूर्वजन्म में जिस प्रकार के कर्म किए होते हैं उसी के अनुसार उसे शरीर मिलता है और उसी के अनुसार सुख-दु:ख देने वाली परिस्थितियाँ। शरीर पूर्व प्रारब्ध पूरा करने का एक संयोग है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह सुख-दु:ख की परिस्थितियों में समभाव बनाए रखे।

इस बोध के पाते ही कि हम शरीरधारी हैं, मनुष्य को निश्चय कर लेना चाहिए कि उसे सुख-दु:ख दोनों का भोग करना है और अपने इस बोधजन्य निश्चय के अनुसार हर समय उद्यत भी रहना चाहिए। जब शरीर धारण किया है तो दु:ख-सुख दोनों का ही भोग करना होगा। शरीरधारियों में से किसी के लिए भी केवल सुख अथवा दु:ख भोगने का कोई विधान नहीं है। इस अटल नियम के होते भी और जानते हुए भी यदि मनुष्य दु:ख के अवसरों पर अधिक व्याकुल अथवा उद्विग्न हो उठता है तो इसे उसका दुर्भाग्य ही कहा जाएगा। दु:ख और सुख शरीर के साथ लगी रहने वाली दो छायाएँ हैं। उन्हें अपने पास से दूर नहीं किया जा सकता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसी दशा में उत्तम यही होता है कि सुख और दुःख दोनों में तटस्थ रहकर अपना यथायोग्य कर्त्तव्य करते रहा जाए। जो इस मर्म के अनुयायी रहकर संसार में बरतते हैं, वे प्रायः सुखी ही रहते हैं।

इस दार्शनिक विवेचन से हटकर यदि व्यवहार क्षेत्र में भी आकर विचार किया जाए तो भी पता चलेगा कि दुःख, कष्ट अथवा आपत्ति के समय व्याकुल होना अथवा धीरज खो देना व्यर्थ है। रोने, चिल्लाने अथवा व्याकुल होने से आज तक किसका दुःख दूर हुआ है? अधैर्य दुःख-कष्ट का उपचार नहीं बल्कि उसका बढ़ाने वाला सिद्ध होता है। एक तो दुःख का कारण स्वयं ही उपस्थित होता है, उस पर यदि धैर्य, साहस, आशा, सहनशीलता और सक्रियता को छोड़कर व्याकुलता, व्यग्रता और कायरता का आश्रय लिया जाए तो परिस्थिति और भी गंभीर हो जाएगी।

काली रात में घटा घिर आने के समान अंधकार और भी सघन तथा गंभीर हो जाएगा। इसके विपरीत धैर्य और साहस को बनाए रहने से बुद्धि और विवेक का दीप जलता रहता है। जिसके प्रकाश में उपाय और उपचार दृष्टिगोचर होते रहते हैं। यही कारण है कि किसी आपत्ति के समय कोई अधैर्यवान तो बुरी तरह हानि की चपेट में आ जाता है और धैर्यवान आपत्ति का आक्रमण विफल कर साफ निकल जाता है। जहाँ अधैर्यवान आपत्ति को अपना बहुत कुछ दे देता है, वहाँ धीर, गंभीर पुरुष कुछ देना तो दूर, उलटे उससे न जाने कितने अनुभव लूट ले जाता है।

यदि दुःख, संकट और आपत्ति के संयोग की प्रतिक्रिया अधैर्य ही होती तो संसार में सबको ही उस स्थिति में गुजरना और व्याकुल होना चाहिए, किंतु ऐसा होता कदापि नहीं। जहाँ बहुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से लोग दुःख आने पर बुरी तरह व्याकुल और उद्विग्न हो उठते हैं, वहाँ बहुत से लोग अपने स्वभाव में स्थिर रहते हैं। उनकी शांति और संतुलन अक्षुण्ण बना रहता है। इस अंतर का कारण और कुछ नहीं, केवल यह होता है कि एक हृदय से निर्बल होता है और दूसरा नहीं। एक विनाश का विश्वासी होने से सोचता है कि अब मैं नष्ट हो जाऊँगा, मेरा सब कुछ बरबाद हो जाएगा। यह संकट अथवा विपत्ति हमें मिटा देगी। कैसे, क्या करें, जो इस भयंकर परिस्थिति से बचें।

दूसरा जीवन और सृजन में विश्वास रखने वाला होने से सोचता है कि आपत्तियाँ अस्थायी होती हैं, दुःख क्षणिक होते हैं। परमात्मा का अंश होने से मनुष्य आनंदस्वरूप है। दुःख अथवा संकट के कारण मेरा कुछ नहीं बिगड़ सकता। मैं एक जीवंत पुरुष हूँ, मुझे प्रभु ने बुद्धि और विवेक दिया है, धैर्य और साहस दिया है। मैं इसके बल पर उसे परास्त करके संकट अथवा आपत्ति के इरादे को चूर-चूर कर दूँगा। अपनी इन्हीं मनोनीतियों के अनुसार निषेध अथवा संबल पाकर एक दुःख में डूब जाता है और दूसरा उससे पार उतर जाता है।

संसार में संकट और आपत्ति सभी पर आती हैं। इससे कोई भी नहीं बचता। संसार में जिसे भी देखिए, सुख-दुःख से द्वंद्व करता हुआ यात्रा पर बढ़ा चला जा रहा है, तब हम ही क्यों दुःख का रोना लेकर बैठे रहें। सुख-दुःखमय इस संसार में सामान्य पुरुष तो क्या, बड़े-बड़े सम्राटों, श्रीमंतों और महान पुरुषों को भी संकटों का सामना करना पड़ा है। शिवि, हरिश्चंद्र, मोरध्वज, नल, पांडव प्रभृति न जाने कितने ऐतिहासिक पुरुषों को अपार संकट उठाने पड़े। हजारों साल बाद आज भी उनका नाम अमर है। इसका कारण यही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है कि उन लोगों ने सारे संकटों को सहर्ष स्वीकार किया, अपने धैर्य और विवेक की परीक्षा दी, पूरी तरह उत्तीर्ण हुए और समय की शिला पर अपना नाम खोदकर अमर हो गए। ऐसे धैर्यवान पुरुष सिंह ही वास्तविक सुख, यश, कीर्ति और पूजा-प्रतिष्ठा के अधिकारी होते हैं और ऐसे पुरुष ही संसार-पथ पर अपने उन आदर्श पदचिह्नों को छोड़कर जाते हैं, जिनका अनुसरण कर लाखों लोग भवसागर से पार हो जाते हैं।

अपने ऊपर आपत्ति या संकट को आया देखकर धैर्य खोना कायरता है। जब संसार के कोई दूसरे लोग दुःख में धैर्य रख सकते हैं, हँसते-खेलते हुए आपत्ति को पार कर सकते हैं, तो हम ही क्यों उन्हें देखकर रोने-चिल्लाने लगें। जबकि परमपिता परमात्मा ने हमें भी साहस, आशा और धैर्य के साथ बुद्धि और विवेक का संबल उनकी तरह दे रखा है। अंतर केवल यह है कि जहाँ संसार के सिंह पुरुष अंधकार आते ही अपने गुणों के प्रदीप प्रज्वलित कर लेते हैं, वहाँ कायर पुरुष घबराकर उनको प्रदीप्त करना ही भूल जाते हैं।

आत्मा का भार, भविष्य का अंधकार कुछ कम हो गया और प्रकाश का लक्ष्य कुछ समीप आ गया है। ऐसे उपकारी संकटों को देखकर रोना-चिल्लाना वैसी ही मूर्खता है जैसी कि किसी विषाक्त फोड़े का आपरेशन करने के लिए आए डॉक्टर को देखकर भयभीत होने की मूर्खता। दुःख के बाद सुख और संकट के बाद सुविधा, प्रकृति का यह अटल नियम है। इस आधार पर भी दुःख देखकर प्रसन्न होना चाहिए। दुःख और संकट उस सुख-संपत्ति की पूर्व भूमिका होते हैं, जो निकट भविष्य में मिलनी होती हैं। बादल और बिजली को देखकर भयभीत होने वाले बालबुद्धि के लोग कुछ देर में होने वाली प्राणदायक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और धन-धान्य विधायक वर्षा को नहीं देख पाते। संकट, सुख और कल्याण के अग्रदूत होते हैं। उनको देखकर भयभीत नहीं होना चाहिए बल्कि सहर्ष उनका स्वागत करना चाहिए।

विश्वास रखिए, दु:ख का अपना कोई मूल अस्तित्व नहीं होता। इसका अस्तित्व मनुष्य का मानसिक स्तर ही होता है। यदि मानसिक स्तर योग्य और अनुकूल है तो दु:ख की अनुभूति या तो होगी ही नहीं और यदि होगी भी तो बहुत क्षीण। तथापि यदि आपको दु:ख की अनुभूति सत्य प्रतीत होती है, तब भी उसका अमोघ उपाय यह है कि उसके विरुद्ध अपनी आशा, साहस और उत्साह के प्रदीप जलाए रखा जाए। अंधकार का तिरोधान और प्रकाश का अस्तित्व बहुत से अकारण भयों को दूर कर देता है।

आशा, विश्वास और परिवर्तन के अटल विधान में आस्था रखने के साथ ही साथ समय रूपी महान चिकित्सक में विश्वास रखिए। समय बड़ा बलवान और उपचारक होता है। वही धैर्य रखने पर मनुष्य के बड़े-बड़े संकटों को ऐसे टाल देता है, जैसे वह आया ही न था। संकट तथा दु:ख देखकर भयभीत होना कापुरुषता है। आप ईश्वर के अंश है, आनंदस्वरूप हैं। आपको धैर्य, साहस, आशा, विश्वास और पुरुषार्थ के आधार पर संकट और विपत्तियों की अवहेलना करते हुए सिंह की तरह ही जीवन व्यतीत करना चाहिए। कठिनाइयों की कसौटी पर खरे उतरकर आपका व्यक्तित्व और अधिक निखरेगा।

एकांगी बनकर अपूर्ण न रह जाएँ

सुख ही सुख अर्जित करने की मनोवृत्ति कहने-सुनने में अच्छी हो सकती है। उससे शरीर को थोड़ी तृप्ति भी मिल सकती है, पर यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन शरीर तक तो सीमित नहीं है, इसमें परिवार का पालन-पोषण, सामाजिक संबंध, नैसर्गिक परिस्थितियाँ, आत्मिक हित और पारमार्थिक आकांक्षाएँ भी उतनी ही सत्य हैं। यदि मनुष्य की काक-चेष्टा मात्र सुखों में रमण करती रही तो वह जीवन के दूसरे महत्त्वपूर्ण अध्यायों की कल्पना तक नहीं करता। मात्र कठिनाइयाँ ही उसे इन अध्यायों की ओर अभिमुख करती हैं। शायर ने इसी की भावाभिव्यक्ति करते हुए लिखा है—

रंज से खूँगर हुआ इंसाँ तो मिट जाता है गम।
मुश्किलें मुझ पर पड़ी इतनी कि आसाँ हो गयीं॥

निरंतर सफलता से तो संसार का केवल एक पक्ष समझ में आता है। कठिनाइयाँ हमें दूसरे भाग का भी बोध करा देती हैं। वे हमें यथार्थ में जीवन जीने की कला सिखा देती हैं। इनके बिना किसी भी प्रयोजन की सिद्धि, चाहे वह आध्यात्मिक हो अथवा सांसारिक, संभव न होगी।

सुख और दुःख संसार-रथ के दो पहिये हैं। एक का अस्तित्व दूसरे पर टिका है। एक दिन है तो दूसरा रात। एक शरीर दूसरा प्राण। दोनों के मध्य से ही जीवन की सरिता का प्रवाह बहता है। यदि अंधकार न हो तो फिर प्रकाश की महत्ता ही क्या रहेगी? तात्पर्य यह है कि जीवन को क्रियाशील बनाए रखने के लिए दोनों ही आवश्यक हैं। इनसे बचा भी नहीं जा सकता। जब तक शरीर है, तब तक सुख-दुःख का निवारण नहीं हो सकता।

सुखप्राप्ति के मार्ग में जो परिस्थितियाँ बाधा उत्पन्न करती हैं उन्हें कठिनाइयाँ मानते हैं। धन-क्षय, शारीरिक व्याधियाँ, अप्रिय पुरुषों का संग, प्रियजनों से विछोह इन्हें ही मोटेतौर पर कठिनाइयाँ मानते हैं। आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति में मनोविकारों व स्वभावजन्य कुकृत्यों को कठिनाई माना जाता है। इन्हीं के कारण मनुष्य दुखी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहता है। किंतु यदि विचारपूर्वक देखा जाए तो यही परिस्थितियाँ महान परिणाम की जननी हैं। उपनिषद्कार ने लिखा है—"**दिजमारुहत तपसा तपस्वी।**" अर्थात तप से ही आत्मोत्थान संभव है। तप का अर्थ कड़कती धूप में बैठकर जप-ध्यान करना, गहन शीत में स्नान करना अथवा शारीरिक तितिक्षा नहीं। इसका सर्वमान्य अर्थ यही है कि मनुष्य मार्ग में आई हुई कठिनाइयों से निरंतर संघर्ष करे। इनसे लड़ते हुए अपने लक्ष्य की प्राप्ति करे। हीरा बिना रगड़ खाए चमकता नहीं। मनुष्य बिना परीक्षा दिए पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता। कठिनाइयाँ और कुछ नहीं, वे एक कसौटी मात्र हैं जो आगे के लिए सचेष्ट करती हैं।

कोई विद्यार्थी यह कहे कि छमाही परीक्षा से न तो मैं उत्तीर्ण होता हूँ न ही अनुत्तीर्ण, फिर क्यों कलम, दवात, कॉपी और कागजों में व्यर्थ खरच करूँ? कई बीमारी आदि का बहाना बनाकर उसे टाल भी देते हैं। किंतु चतुर अध्यापक उन्हें ऐसा करने से रोकते हैं और उन्हें बताते हैं कि यदि यह परीक्षा न दी तो यह कैसे अनुमान लगा पाएँगे कि वार्षिक परीक्षा में किन-किन विषयों में कितना परिश्रम करना है? पहली स्थिति में तो फेल होने की ही अधिक आशंका रहती है। ऐसे विद्यार्थियों की तरह अपने लिए भी यह उचित है कि अपनी प्रगति के लिए कठिनाइयों को जीवन का आवश्यक अंग मान लें।

बिना विपत्ति की ठोकर लगे विवेक की आँखें नहीं खुलती। सच्चे ज्ञान की कसौटी यह है कि उसे कठिनाइयों में प्राप्त किया गया हो। प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री प्रेमचंद ने लिखा है—"विपत्तियों से बढ़कर तजुरबा दिलाने वाला विद्यालय आज तक नहीं खुला।" कठिनाइयाँ मनुष्य के विकास का साधन हैं। जिस तरह आग की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तेज भट्ठी में तपाने पर सोने का रंग निखर जाता है वैसे ही सच्चे व्यक्ति का जीवन कठिनाइयों की आग से परिपक्व बनता है। महात्मा गांधी, बुद्ध, ईसा आदि महापुरुष पग-पग पर कठिनाइयों से लड़े थे। तब महान सामाजिक व राजनीतिक क्रांतियों का उन्नयन कर सके थे।

विपत्ति में मानसिक शक्तियाँ अंतर्मुखी हो जाती हैं। इससे मनुष्य को सत्य-असत्य, अपने-पराये का यथार्थ ज्ञान होता है। आत्मीय स्वजनों की पहचान भी कठिन समय आ पड़ने पर ही होती है—

कहि रहीम सम्पत्ति सगे बनत बहुत बहुरीति।
विपति कसौटी जे कसे तेई साँचे मीतिङ्क

सच्चे मित्र की, आत्मीय की पहचान कठिनाइयों में होती है। इसे और भी स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करते हुए कवि ने लिखा है—

रहिमन विपदा हू भली जो थोड़े दिन होय।
हित अनहित या जगत में जानि पड़े सब कोयङ्क

अपना हितैषी कौन है और कौन कपटपूर्वक धूर्तता का, धोखेबाजी का व्यवहार कर रहा है, इसकी परीक्षा मुसीबत पड़ने पर ही होती है। सुखी जीवन के तो हजार साथी होते हैं पर मुसीबत पड़ने पर कोई सच्चा सगा ही काम देगा।

सन्मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति की सच्ची परीक्षा कठिनाइयों में ही होती है। ऐसे अवसरों पर बहुधा लोगों को यह कहते सुना जाता है कि उन पर परमात्मा रूठा है। उनके दुर्दिन चल रहे हैं। पर स्थिति ठीक इसके विपरीत है। महात्मा स्वेट मार्डेन ने लिखा है—"जितने दु:ख, जितनी विपत्तियाँ हमें प्राप्त होती हैं उनका कारण यह है कि अनंत ऐश्वर्यशाली एवं सर्वशक्तिमान परमात्मा से हम अलगाव का भाव बनाए हैं।" कठिनाइयाँ वह वरदान हैं जिन्हें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देकर परमात्मा हमें अपने पास बुलाना, अपनी गोद में बिठाना चाहता है। सच्चे अध्यात्मवादी की पहचान मुसीबतों में होती है। मुसीबतों में तपे बिना व्यक्ति अपने आप को ब्रह्मवादी घोषित करने का अधिकार नहीं पाता है। सच्चा ईश्वरवादी वह है जो कहता है—"मालिक मुझे सुख नहीं दुःख दे। सुविधाएँ नहीं मुसीबतें दे, ताकि तुमसे विलग न होऊँ।"

विपत्ति वह खराद है जिससे परमात्मा अपने रत्नों की चमक बढ़ाता है। इसीलिए आप देखिए कि आपके जीवन में भी कठिनाइयाँ हैं अथवा नहीं। आप अध्यात्मवादी हैं। आपके जीवन में निरी कठिनाइयाँ बाघ की भाँति मुँहबाए हैं। आप इनसे विचलित तो नहीं हो रहे। यदि आपके पाँव लड़खड़ाते हैं तो सँभलकर खड़े होइए। धर्म और अध्यवसाय का अवलंबन लीजिए। जिसे धीरज है जो परिश्रम से पाँव पीछे हटाना नहीं जानता, सफलता की देवी उसी के गले विजयमाला पहनाती है। धैर्य प्रारंभ में कड़ुआ भले लगे किंतु उसका फल मधुर होता है।

आत्मनिर्भर बनने का और अपने में आत्मविश्वास जाग्रत करने का एक ही गुरुमंत्र है कि आप अपने जीवन में कठिनाइयों को आने दीजिए, दूसरों के दुःख, तकलीफ और मुसीबतों में हाथ बटाइए। दूसरों की सहायता कीजिए और परमात्मा आपकी सहायता करेगा। दूसरों के दुःखों को समझिए और अनुभव कीजिए कि आप असंख्यों से सुखी हैं, ऐसा दृष्टिकोण बना लेने से कठिनाई और दुःख की परिस्थितियाँ टल जाएँगी और अपने पीछे सफलता की राह बना जाएँगी। किसी कवि ने कहा है—

गम राह नहीं कि साथ दीजे।
दुःख बोझ नहीं कि बाँट लीजे॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कठिनाइयाँ छोटे मनुष्य को निस्तेज-निष्प्राण बना सकती हैं, किंतु महान वे हैं, जो दु:खों की छाया में पलते हैं औरों के दु:खों, मुसीबतों में हाथ बटाते हैं। पुरुषार्थ भी इसी का नाम है कि व्यक्ति परिस्थितियों से संघर्ष करे। स्वयं उनके वश न हो वरन उन्हें वशवर्ती करे।

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक एलफ्रेड एडलर का मत है कि भयभीत और हीन भावनाओं के व्यक्ति वे होते हैं जिनके जीवन में कभी कठिनाइयाँ नहीं आई होतीं अथवा जो कठिनाइयों से कतराते या बचते रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों का मानसिक विकास रुक जाता है। ऐसे व्यक्ति छोटे-छोटे कार्यों में भी सफलता नहीं पाते। कठिनाइयाँ अपने आप उतनी भयावह नहीं होतीं जितनी उनकी भयोत्पादक कल्पना। जब कभी किसी कठिनाई का आभास हो, आत्मविश्वास जगाइए, निश्चय ही उससे आपको हितकर परिणाम प्राप्त होंगे।

पूर्वकाल में दार्शनिक व्यवस्था ऐसी बनाई गई थी जिसमें अनिवार्य रूप से छोटे-बड़े बालकों को गुरुकुलों में रखकर अक्षरज्ञान कम और व्यावहारिक जीवन की कठिनाइयों का पाठ पढ़ाने का क्रम अधिक रखा जाता था। जब तक यह पद्धति चलती रही इस देश में साहसी, पुरुषार्थी, चरित्रवान और प्रतिभाशाली नररत्नों की कमी नहीं रही। किंतु जब से कठिन परिस्थितियों में रहकर जीवन बिताने का ह्रास हुआ तब से निर्बल, निस्तेज और दुराचारी व्यक्तियों का ही बाहुल्य होता चला जा रहा है।

इन परिस्थितियों के रहते हुए किसी समाज-राष्ट्र का उत्थान संभव नहीं। कठिनाइयों से न जूझने का अर्थ यह है कि व्यक्ति सत्य की अवहेलना कर रहा है और मिथ्याचार को प्रोत्साहन दे रहा है। साहस, सदाचार आदि नैतिक सद्‌गुण कठिनाइयों से विमुख होते ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पलायन कर जाते हैं, तब फिर व्यक्तित्व के विकास का मार्ग अवरुद्ध होना ही निश्चित मानिए। एक व्यक्ति ने अपना जीवनलक्ष्य प्राप्त करने के लिए साधना-उपासना का क्रम बनाया। पड़ोस वालों ने देखा तो लगे उपहास करने। बस उसका उत्साह ढीला पड़ गया। ऐसी अवस्था में सत्य की खोज करना एवं अपनी दुर्बलताओं से जूझना कहाँ बन पड़ेगा? पर दूसरे वे होते हैं जो यह मानते हैं कि उपहास करने वाले व्यक्ति हमें बुराइयों से सावधान रखने वाले पहरुये हैं। जो लोग उपहास और अवरोध की परवाह न करते हुए अपने रास्ते पर चलते रहते हैं, वे स्वयं सफलता प्राप्त करते हैं और दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनते हैं। ऐसे ही व्यक्ति समाज का उत्थान कर सकते हैं। उन्हीं से आध्यात्मिक प्रगति की आशा की जा सकती है।

जीवन के विभिन्न व्यवसायों में चाहे वह लौकिक हो अथवा आत्मा-परमात्मा की भक्ति से संबंध रखने वाले हों, सबको कठिनाइयों के मार्ग से ही गुजरना पड़ेगा। शरीर मिला है तो रोग, शोक, बीमारी आदि आएँगी ही। जीवनयापन के लिए कोई भी उद्योग करें, उसमें सब ओर लाभ ही लाभ हो यह संभव नहीं। सुख-सुविधाओं की सामान्य इच्छा सभी की होती है फिर सारी सुख-सुविधाएँ आपको ही मिल जाएँगी इसकी कोई गारंटी नहीं है। अतएव आप ऐसे समय में भी संतोष और धैर्य की वृत्ति बनाए रहें और अपने चरम लक्ष्य की प्राप्ति में लगे रहें तो आपका जीवन सफल माना जाएगा।

दुःख और कठिनाइयों में ही सच्चे हृदय से परमात्मा की याद आती है। सुख-सुविधाओं में तो भोग और तृप्ति की ही भावना बनी रहती है। परमात्मा की याद तब आती है जब व्यक्ति असहाय सा चारों ओर से अपने आप को कठिनाइयों से घिरा पाता है। इसलिए उचित यही है कि विपत्तियों का सच्चे हृदय से स्वागत करें। परमात्मा से माँगने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लायक एक ही वरदान है कि वह कष्ट दे, मुसीबतें दे ताकि मनुष्य अपने लक्ष्य के प्रति सावधान व सजग बना रहे। कृष्ण के समक्ष अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए कुंती ने ऐसी ही कामना की थी—

विपदः सन्तु नः शाश्वत तत्र जगद्गुरो।
भवतो दर्शनम् यत्स्याद पुनर्भवदर्शनमङ्क्ष

"जगद्गुरो! हमारे जीवन में सदैव पग-पग पर विपत्तियाँ आती रहें क्योंकि विपत्तियों में ही निश्चित रूप से आपके दर्शन हुआ करते हैं और आपके दर्शन हो जाने पर फिर जन्म-मृत्यु के चक्कर में नहीं आना पड़ता।" अपने अंत:करण की कुंती भी यदि ऐसी कामना करने लगे तो लक्ष्यप्राप्ति की आधी सफलता आप पा गए समझिए। पूर्णता की प्राप्ति कराने में कठिनाइयाँ आपकी बाधक नहीं सहायक ही होती हैं। उनके होने से ही तो संघर्ष करने का पौरुष प्रकट होता है और सुविकसित व्यक्तित्व के द्वारा किया हुआ प्रबल पुरुषार्थ कभी निरर्थक नहीं जाता। उससे लक्ष्यप्राप्ति की दिशा में निरंतर प्रगति ही होती जाती है।

अपने शत्रु आप न बनें

वस्तुत: बाहरी शत्रु उतना खतरनाक नहीं होता जितना अपने दुर्ग में बैठा अपना शत्रु। विपरीत परिस्थितियों में घबरा जाने की कायरता इतनी बड़ी दुश्मन है कि वह आदमी को कहीं का भी नहीं छोड़ती।

उन निर्बलमना व्यक्तियों को महानता के लक्ष्य प्राप्त कर सकने की आशा नहीं करनी चाहिए, जो असफलताओं, बाधाओं, विरोधों एवं कठिनाइयों से डरते-घबराते हों। यह स्थितियाँ उस पथ के उपहार हैं जो पथिक को स्वीकार ही करने होते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महानता इस जीवन में ही मिल जाए आवश्यक नहीं। प्रायः होता यही है कि महानता के मार्गगामियों को अपने जीवनकाल में तिरस्कार, उपेक्षा, आलोचना और विरोधों को सहन करना पड़ता है, किंतु जब वे अपना कर्त्तव्य पूरा कर संसार से चले जाते हैं, तब लोग उनकी महानता स्वीकार करते, जीवन गाथा कहते, लिखते और पढ़ते हैं। उनकी पूजा करते और उन्हें जीवन का आदर्श बनाते हैं।

ईसामसीह का पूरा जीवन कठिनाइयों, कष्टों, विरोधों, तिरस्कार तथा अत्याचार के बीच बीता। किंतु वे अपने ध्येय पर डटे रहे। प्राण दे दिए, किंतु व्रत का त्याग नहीं किया। ईसा प्रेम, दया, क्षमा का संदेश संसार को देने चले थे। कितना महान और कल्याणकारी लक्ष्य था। उसमें उनका किसी प्रकार का कोई स्वार्थ नहीं था। वे मनुष्य के बीच फैले द्वेष, घृणा, आक्रोश तथा संघर्ष से द्रवित हो उठे थे। वे नहीं चाहते थे कि मनुष्य, जो कि परमपिता परमात्मा के पुत्र हैं इस प्रकार की दूषित प्रवृत्तियों के शिकार बन दुखी, संतप्त तथा त्रस्त जीवन बिताएँ। यदि वह अपना अज्ञान दूर कर दें, सद्प्रवृत्तियों का मूल्य एवं महत्त्व समझें; प्रेम, दया, करुणा और क्षमा के दिव्य गुणों की शीतलता अनुभव करें तो निश्चय ही अंत में पिता के स्वर्गीय राज्य में स्थान पाएँगे। जीवन में भी सुख-शांति के लिए कलपते न रहें। उन्होंने उस दिव्य अनुभूति को अनुभूत किया था, इसीलिए विश्वास था कि प्रयत्नपूर्वक भ्रम में भटकती मनुष्य जाति का अज्ञान दूर किया जा सके, संदेश दिया जा सके तो सभी मनुष्य उस स्वर्गीय अनुभूति को प्राप्त करके उसका सुख अनुभव कर सकेंगे।

इसी आशा-विश्वास के साथ वे अपना शीतल संदेश लेकर मानवता की सेवा करने के लिए उतरे थे। उनकी उत्कृट इच्छा थी कि हमारे मनुष्य भाई भी उस स्वर्गीय शांति को पाएँ जो उन्हें मिली थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईसा का यह विचार कितना महान, निस्पृह, निर्विकार एवं निस्स्वार्थ था। इसमें कितना उपकार और मनुष्यों के प्रति मंगल भावना भरी हुई थी। किंतु मनुष्यों ने उस आलोकदाता के साथ क्या व्यवहार किया? इतना कष्ट, इतना क्लेश, तिरस्कार एवं त्रास कि उन्हें अनेक बार एकांत में बैठकर रोना पड़ा, इसलिए नहीं कि उनको कष्ट दिया जा रहा है, बल्कि इसलिए कि आखिर मनुष्य जाति अपना हित सुनना-समझना क्यों नहीं चाहती? यदि ईसा के स्थान पर कोई दुर्बलमना व्यक्ति होता तो वह यह कहकर अपना रास्ता बदल लेता कि जब मूर्ख मनुष्य अपने कल्याण की बात सुनना-समझना ही नहीं चाहते, तब मेरी क्या गर्ज पड़ी है जो इन्हें समझाने की कोशिश करूँ और बदले में पत्थर खाऊँ।

किंतु संसार के सच्चे हितैषी इस प्रकार कहाँ सोच पाते हैं। वे एक बार अपने निर्विकार मनोमुकुर में जिस सत्य के दर्शन कर लेते हैं, उसका आलोक संसार को देने के लिए आजीवन प्रयत्न करते रहते हैं। वे विरोध अथवा तिरस्कार की परवाह नहीं करते। क्योंकि उन्हें पता रहता है कि लोग जो कुछ प्रतिकूल कर रहे हैं, अज्ञानवश ही कर रहे हैं। यदि उनमें यह अज्ञान न होता तो उन्हें आलोक देने की आवश्यकता ही क्यों होती और क्यों मेरी आत्मा मुझे इस कठोर कर्त्तव्य के लिए कहती। साथ ही यह विश्वास भी होता है कि मनुष्यों का यह अज्ञान आज नहीं तो कल अवश्य दूर हो जाएगा। मुझे 'आज ही' की जिद के साथ अपने कर्त्तव्य को बोझिल नहीं बना लेना चाहिए। मनुष्य, मनुष्य है, वे एक दिन समझेंगे और सत्य के दर्शन करेंगे।

ईसा को सफलता की कोई जल्दी न थी, उन्हें चिंता थी अपने कर्त्तव्यपालन की। वे लगन और धैर्यपूर्वक अपने कर्त्तव्य में लगे रहे और उसकी पूर्ति में ही अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। ईसा जीवनभर अपने ध्येय में असफल रहे। किंतु एक क्षण को भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचलित न हुए। आज यह उनके धैर्य एवं निस्स्वार्थ प्रयास का ही सत्फल है कि आधे से अधिक संसार उनका अनुयायी है। वह ईसा जिन पर जीवन काल में पत्थर मारे गए, बड़े से बड़ा त्रास दिया गया, यहाँ तक कि जीवित क्रूस पर लटकाकर मार डाला गया, जीवनोपरांत ईश्वर के समान पूजे और माने गए। आज उनका नाम संसार के महानतम व्यक्तियों में है।

महानता को सुख नहीं है, जैसा कि लोग समझते हैं। यह मनुष्य की जीवनकालीन सेवाओं, लोकमंगल की कामनाओं, प्रयत्नों, कष्टों, बलिदानों और ध्येयधीरता का प्रमाणपत्र है, जो प्राय: उसके दिवंगत हो जाने के बाद संसार द्वारा घोषित किया जाता है। जीवनकाल में ही सफलता का हठ लेकर चलने वालों को यही उपयुक्त है कि वे या तो अपना कदम पीछे हटा लें अथवा अपनी मनोवृत्ति में सुधार कर लें।

महान उद्देश्यों में सफलता जीवन काल में नहीं मिलती, ऐसा नैसर्गिक नियम नहीं है। वह जीवनकाल में भी मिल सकती है। भगवान बुद्ध, महावीर, विवेकानंद और महात्मा गांधी प्रभृति सत्पुरुष इसके उदाहरण हैं। किंतु महान पथ पर चरण रखने वालों को सफलता-असफलता और उसके आगमन की चिंता से मुक्त रहकर ही अपने कर्त्तव्य में लगा रहना चाहिए। उसे जब आना है आ जाएगी। उसके विषय में सोचना और चिंता करना क्या!

श्रेयपथ पर आने वाली कठिनाइयों से घबराकर निराश, हताश, निरुद्योगी हो जाने वाले अपने लक्ष्य को नहीं पा सकते। संसार में ऐसे न जाने कितने कम हिम्मत व्यक्ति हुए होंगे और आज भी होंगे जो किसी लक्ष्य को पाने का इरादा लेकर चले होंगे किंतु चार-छह कदम चलने पर कठिनाइयों का सामना होते ही पीछे हटकर बैठ रहे होंगे। ऐसे लोगों के उदाहरण तो नहीं बताए जा सकते क्योंकि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साहसहीन व्यक्तियों का अंकन न तो समय के स्मरणपट पर होता है और न वे स्वयं अपना प्रकाश करते हैं। महान उद्देश्य को लेकर न चलना उतनी लज्जा की बात नहीं होती, जितनी कि चलने के बाद कठिनाइयों के भय से रुक जाना अथवा पीछे हट जाना। समय के स्मृतिपट पर वे ही पुरुषार्थी व्यक्ति अंकित होते हैं और लोकप्रेरणा के लिए उदाहरण बनते हैं, जो अपने श्रेयपथ की बाधाओं, विघ्नों तथा कठिनाइयों से तिल-तिल कर जूझते हुए बढ़ते रहते हैं। अपनी इस शक्ति तथा साहस को सुरक्षित रखने के लिए वे इनकी शत्रु निराशा एवं निरुत्साह को स्वप्न में भी पास फटकने नहीं देते। ऐसे ध्येय-धीर मनस्वी वीर पुरुष पहाड़ जैसी असफलता की उपेक्षा कर कण जैसी सफलता पर नजर रखकर उत्साह एवं सक्रियता की जननी प्रसन्नता को विनष्ट नहीं होने देते। उनकी गणना के विषय बढ़े हुए कदम होते हैं, रुके अथवा परिस्थितियों द्वारा पकड़कर पीछे हटाए हुए नहीं। लड़ाई के मैदान में कभी-कभी रुकना और पीछे भी हटना होता है। भय अथवा कायरता के वशीभूत होकर भागने के लिए नहीं बल्कि सँभलने, समझने और फिर तेजी से आगे बढ़ने के लिए अब्राहम लिंकन को एक सौ आठ बार असफलता का मुख देखना पड़ा। हुमायूँ इक्कीस बार लड़ाई में हारा। प्रताप को जीवनभर लड़ना पड़ा और सुभाष की असफलता संसार की बड़ी सफलताओं के साथ लिखी गई। किंतु क्या इन ऐतिहासिक पुरुषों ने कभी निराश अथवा हतोत्साह होकर हार मानी। यदि इनमें यह दुर्बलता रही होती तो आज उनका नाम इतिहास में न होता। सफलता-असफलता की सुखद अथवा दुःखद भावना से परे कर्मठ कर्त्तव्यवादी ही महानता के शिखर पर चढ़कर अपने लक्ष्य की उपलब्धि किया करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफलता के लिए साधनों की नहीं, साहस एवं संलग्नता की आवश्यकता होती है। अमेरिका के महान प्रेसीडेंट विल्सन को आज कौन नहीं जानता। अमेरिका में गुलामी-प्रथा का विरोध करने वाले इस महापुरुष का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। उन्होंने अपना जीवन विवरण देते हुए लिखा है—

"मैं एक अत्यंत गरीब घर में पैदा हुआ था। घर में इतनी गरीबी थी कि दो-दो, तीन-तीन दिन भोजन के दर्शन नहीं होते थे। जब कभी अबोधावस्था में भूख से व्याकुल होकर किसी से रोटी माँगता था तो वह भी नहीं मिलती थी। दस वर्ष की आयु में रोटी की तलाश में घर छोड़कर भागना पड़ा। अनेक मासों तक दर-दर की ठोकरें खाने के बाद एक साधारण सी नौकरी मिली, जिसमें वेतन तो बहुत कम था किंतु वर्ष में एक माह की छुट्टी मिलती थी। ग्यारह वर्ष तक उस नौकरी को करता रहा। वर्ष में एक माह की छुट्टी का अवकाश मैं पढ़ने में लगाया करता था। इस प्रकार ग्यारह वर्ष की नौकरी में मुझे केवल ग्यारह माह पढ़ने के लिए मिले। जिसका मैंने परिश्रमपूर्वक इतना उपयोग किया कि अच्छी खासी योग्यता प्राप्त कर ली। अपने कर्त्तव्य-कार्य को मैंने किस तत्परता से किया, इसका प्रमाण यह है कि मालिक ने काम खत्म होने पर मुझे दो सौ रुपये मूल्य के जानवर इनाम में दिए जिन्हें बेचकर मैंने वह धनराशि धरोहर के समान, आगे के लिए सुरक्षित रख ली। मेरी इच्छा जीवन में तरक्की करने की थी इसलिए मैं जीतोड़ मेहनत करता और मजदूरी का एक-एक पैसा बचा लेने की कोशिश करता।"

"इक्कीस वर्ष की आयु तक मैंने बीस रुपये मासिक पर खेत जोतने, लकड़ी काटने, चीरने और ढोने का काम किया, जिसमें मुझे सूर्योदय से एक पहर रात गए तक काम करना पड़ता था किंतु मैंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निराशा अथवा उत्साहहीनता को पास न आने दिया। इस बीच अवकाश के समय में मैं बराबर अध्ययन करता और आगे उन्नति की युक्ति पर बराबर सोचता रहा, जिससे मैं इस जीतोड़ मेहनत की नौकरी के समय में भी एक हजार पुस्तकें पढ़ सका। अपने बढ़ाए हुए ज्ञान और बचाई हुई पूँजी को लेकर आगे बढ़ा और कोई स्वतंत्र काम करने के विचार से सौ मील की दूरी पर नाटिक नामक कसबे में मोची का काम सीखने गया। वहीं मैंने काम सीखकर अपना काम जमाया। मेरी उपार्जित दक्षता एवं शिक्षा ने मेरा साथ दिया और मैं शीघ्र अपने ईमानदार इरादों, विचारों तथा कर्मों से इतना लोकप्रिय हो गया कि वहीं विधान सभा के निर्वाचन में बहुमत पा सकने में सफलता प्राप्त की, जो कि बढ़ती-बढ़ती अमेरिका के सम्मानित एवं उत्तरदायित्वपूर्ण पद तक जा पहुँची।''

अंत में उन्होंने अपने जीवन का उदाहरण देते हुए कहा कि जो लोग उन्नति के लिए साधनों की कमी की शिकायत करते हैं, वे वास्तव में उन्नति चाहते नहीं और अपनी साहसहीनता के साथ अकर्मण्यता का परिचय देते हैं।

सचाई को जानें और आगे बढ़ें

कठिनाइयों का मानव जीवन में बड़ा महत्त्व है। यह बात सुनने में बड़ी अजीब सी लगती है, लेकिन है सत्य। कोई सोच सकता है कि जिन कठिनाइयों से कष्ट होता है, प्रगति में बाधा पड़ती है, वे किसी के जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण कैसे हो सकती हैं? जीवन में महत्त्व तो सुविधा का होता है, जिससे आराम मिलता है और प्रगति का लक्ष्य आसान होता है। यह विचार किसी हद तक सही होने पर भी अपूर्ण है। यदि कठिनाइयों के महत्त्व पर गहराई से विचार किया जाए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो पता चलेगा कि कठिनाइयाँ मानव जीवन की सार्थकता के लिए जरूरी हैं।

सोने के लिए आग का जो महत्त्व है, वही महत्त्व मानव जीवन के लिए कठिनाइयों का है। सोना जब आग में अच्छी तरह तप लेता है, तभी वह पूरी तरह निखरता है और हर प्रकार से इस संसार में अपना उचित मूल्य पाता है। इसी प्रकार जब मनुष्य कठिनाइयों के बीच से गुजरता है तो उसकी बहुत सी कमियाँ और विकृतियाँ दूर हो जाती हैं। वह शुद्ध सोने जैसा खरा और मूल्यवान हो जाता है। जब तक मनुष्य पूरी तरह सुख-सुविधा में रहता है, तब एक प्रकार से उसकी आँख बंद रहती है। अपनी मौज में वह जो चाहता है, करता रहता है। इस प्रकार के अल्हड़ जीवनयापन में मनुष्य में अनजान में ही अनेक दोष और विकार आ जाते हैं। किंतु उस सुख-सुविधा की स्थिति में उसे उसका पता नहीं चलता। अपने विकारों और दोषों का पता उसे तभी चलता है, जब किसी कठिनाई के आने पर उसकी आँखें खुलती हैं।

यह मानव-स्वभाव की विचित्रता ही है कि वह सुख-सुविधा के समय तो असावधानी बरतता है किंतु मुसीबत आने पर अधिक से अधिक सावधान, शुभ तथा शुद्ध रहने का प्रयत्न करता है। बड़े-बड़े आस्तिक लोग भी संपत्ति की स्थिति में ईश्वर को भूले रहते हैं। उन्हें सुख के नशे में उसकी याद तक नहीं आती। पर जब कोई विपत्ति सिर पर आ जाती है तो वह बड़ी तत्परता से परमात्मा का स्मरण ही नहीं, उसकी उपासना तक करने लगते हैं। इस विरोधी प्रतिक्रिया को देखते हुए यही मानना होगा कि कठिनाइयाँ वास्तव में बड़ी महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी हैं, जो मनुष्य को शुद्ध-बुद्ध और आस्तिक बनने में सहायक होती हैं। पावनता, मानवता की विशेष शोभा है, जिसकी प्राप्ति कठिनाइयों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की प्रेरणा से ही होती है। यह बात मानव जीवन में कठिनाइयों के महत्त्व का ही प्रतिपादन करती है।

किसी शस्त्र के लिए 'शाण' का जो महत्त्व है, वही महत्त्व मानव जीवन में कठिनाइयों का है। रखे अथवा पड़े रहने से हथियारों में जंग लग जाती है। उनकी धार उतर जाती है और ये कुंद होकर बेकार हो जाते हैं। किंतु जब वे शाण पर चढ़ाकर तराश दिए जाते हैं, तो पुनः तीव्र, प्रखर तथा शानदार होकर चमकने लगते हैं। उनका विकार दूर हो जाता है और वे शुद्ध, नए होकर उपयोगी बन जाते हैं। तब उनसे उनका काम बखूबी लिया जा सकता है। इसी प्रकार कठिनाइयों के चक्र पर चढ़कर, उनसे रगड़कर मनुष्य की सारी शक्तियाँ और सारे गुण प्रखर हो उठते हैं। उनमें नई धार और नई योग्यता आ जाती है। आराम का जीवन बिताते रहने पर शक्तियों में कुंठा आ जाती है। अप्रयुक्त होने से वे बेकार लगती हैं। पर जैसे ही कोई कठिनाई अथवा मुसीबत सामने आती है, मनुष्य उससे बचने और छूटने के लिए सक्रिय हो उठता है। साथ ही उसकी शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक शक्तियाँ भी संघर्ष में पड़कर अपना योगदान करने लगती हैं। इस संघर्ष से उनकी सारी कुंठा और निरुपयोगिता समाप्त हो जाती है। मनुष्य हर ओर से तरोताजा हो जाता है। कठिनाइयों के अवसर पर ही उसे अपनी शक्ति और गुणों का ठीक-ठीक पता चलता है। मानव जीवन में शक्ति तथा गुणों की सक्रियता की जो महती आवश्यकता है, उसकी पूर्ति कठिनाइयों द्वारा ही होती है।

मानव-मस्तिष्क की प्रकृति ही कुछ ऐसी है कि इससे ज्यों-ज्यों काम लिया जाता है, वह त्यों-त्यों अधिक प्रौढ़, प्रबुद्ध तथा शक्तिशाली होता जाता है। इसके विपरीत ज्यों-ज्यों इसे आराम दिया जाता है, त्यों-त्यों सुस्त और चेतनाहीन होता जाता है। सुख-सुविधा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के समय तो मनुष्य निष्क्रिय होकर आलस्य में पड़ा रहता है। उसे प्रायः न किसी बात पर सोचने की जरूरत होती है और न मगज मारने की। ऐसी दशा में मस्तिष्क का सुस्त और कुंठित होना स्वाभाविक ही है। किंतु कठिनाई तथा विपत्ति के अवसर पर स्थिति बिलकुल भिन्न होती है। उस दशा में मुसीबत से बचने और कठिनाई को हल करने के लिए उसे बहुत कुछ सोचना-विचारना, योजना और कार्यक्रम बनाना पड़ता है। मस्तिष्क को हर समय सक्रिय तथा कार्यरत रखना पड़ता है। इस बौद्धिक परिश्रम से उसका मस्तिष्क विचारक, निर्णायक तथा विवेकवान बन जाता है। मानव-प्रगति के लिए जिस विवेकशीलता, विचारशीलता और निर्णयशक्ति की आवश्यकता होती है, वह कठिनाइयों की कृपा से सहज ही पूरी होती रहती है।

किंतु कठिनाइयों से यह सब लाभ होता उसी को है जो उनका सहर्ष स्वागत करता है; डटकर उनसे लोहा लेता है और उन्हें परास्त करने में गौरव और पुरुषार्थ की सार्थकता समझता है। ऐसे धीर और बुद्धिमान व्यक्ति के लिए कठिनाइयाँ उसी प्रकार हितैषिनी होती हैं जिस प्रकार अखाड़े का वह गुरु जो अपने शिष्यों को रगड़-रगड़कर मजबूत तथा पकड़ने लड़ने में दक्ष बनाता है। कायर और भीरु व्यक्ति के लिए मुसीबत वास्तव में मुसीबत ही होती है। जो कठिनाई अथवा आपत्ति को देखकर भयभीत हो जाते हैं, जिनके मन-मस्तिष्क में निराशा से अँधेरा छा जाता है, कर्त्तव्यमूढ़ता से जिनके हाथ-पैर रुक जाते हैं, साहस और शक्ति जवाब दे जाती है; वे निश्चय ही उसके शिकार बनकर बरबाद हो जाते हैं। कायर मनुष्य को कठिनाइयाँ नहीं बल्कि उनके प्रति उसका भय ही उसे खा जाता है। जो कठिनाइयों से हार मान लेते हैं, वे निश्चय ही जीवन का दाँव हार जाते हैं और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो उसकी चुनौती स्वीकार कर खम ठोंककर उद्यत हो जाते हैं उन्हें निश्चय ही परास्त कर देते हैं।

कठिनाइयों का वास्तविक स्वरूप क्या है, इसकी व्याख्या दार्शनिक 'चुनिंग तोहांग' ने ठीक ही की है। वे लिखते हैं— "कठिनाई एक विशालकाय भयंकर आकृति के, किंतु कागज के बने हुए शेर के समान होती है, जिसे दूर से देखने पर बड़ा डर लगता है, पर एक बार जो साहस करके उसके पास पहुँच जाता है, वह उसकी असलियत को जान लेता है कि वह केवल एक कागज का खिलौना मात्र ही है।"

कठिनाइयाँ वास्तव में कागज के शेर के समान ही होती हैं। वे दूर से देखने पर बड़ी ही डरावनी लगती हैं। उस भ्रमजन्य डर के कारण ही मनुष्य उन्हें देखकर भाग पड़ता है। पर जो एक बार साहस कर उनको हटाने के लिए तैयार हो जाता है, वह इस सत्य को जान जाता है कि कठिनाइयाँ जीवन की सहज प्रक्रिया का अंग होने के सिवाय और कुछ नहीं होती। संसार में संपत्ति-विपत्ति, हानि-लाभ, सुख-दुःख के जोड़े दिन-रात की तरह एकदूसरे से बँधे घूमते रहते हैं। इस द्वंद्व चक्र से संसार में कोई नहीं बच सकता। हम साधारण लोगों की बात ही क्या, बड़े-बड़े महापुरुष भी कठिनाइयों और विपत्तियों से न बच सके। सर्वसाधनसंपन्न राम, कृष्ण, हरिश्चंद्र, नल, पांडव, प्रताप, शिवाजी, गुरु गोविंदसिंह जैसे लोग तक विपत्ति के चक्र से न बच सके। कठिनाइयाँ मानव जीवन की सामान्य प्रक्रिया का ही एक अंग हैं। जो संसार में जन्मा है उसे कठिनाइयों का सामना करना ही पड़ेगा। ऐसी अनिवार्य स्थिति से घबराना अथवा भयभीत होना बुद्धिमानी नहीं है। बुद्धिमानी है विपत्तियों तथा कठिनाइयों से लड़ने और उन पर विजय पाने में।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो चेतन है, विवेकवान और जीवन से पूर्ण है, वह मनुष्य उन्नति करने के लिए अवश्य ही जिज्ञासा करता है। प्राय: सभी मनुष्य अपने को चेतन तथा जीवंत मानते हैं और सभी जीवन में कुछ न कुछ उन्नति करने के लिए उत्सुक रहते हैं। लेकिन संसार में ऐसे मनुष्य की संख्या अधिक नहीं होती जो किसी उल्लेखनीय शिखर पर पहुँचते हैं। ऐसा केवल इसलिए होता है कि सब मनुष्य समान रूप से न तो पुरुषार्थ करते हैं और न कठिनाइयों से टक्कर लेने का साहस रखते हैं। उन्नति का पथ सरल अथवा सुगम नहीं होता। उसमें पग-पग पर विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता है। श्रेय की प्राप्ति परिश्रम तथा संघर्ष द्वारा होती है। संसार का ऐसा कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं, जो कठिनाई उठाए बिना ही पूर्ण हो जाए। जिसमें कठिनाई सहने और विपत्ति से लड़ने का साहस होता है, वही सफलता के उन्नत शिखर पर पहुँच जाता है। जिन्होंने अपने जीवन में आपत्तियों का सामना किया है, कठिनाइयों के बीच से अपना अभियान आगे बढ़ाया है, वे ही महान कार्य कर सके और महापुरुष बन सके।

महापुरुषत्व का प्रमाण इस बात में नहीं कि कोई किस ऊँचे स्थान पर पहुँच सका है? महापुरुषत्व का प्रमाण इस बात में है कि उस स्थान पर पहुँचने में किसने कितनी कठिनाई उठाई? कितनी आपत्ति और प्रतिकूलताओं से संग्राम किया और उनको परास्त किया। जो पद अथवा प्रतिष्ठा जितनी आसानी से मिल जाती है, वह उतनी ही सस्ती और कम महत्त्व की होती है। आज अमेरिका का प्रेसीडेंट कोई न कोई हर पाँच साल बाद होता है। किंतु उस सर्वोच्च पद पर हर व्यक्ति उतना महान नहीं समझा जा सकता जितने कि जार्ज वाशिंगटन और अब्राहम लिंकन माने जाएँगे। आज सामान्यत: राष्ट्र के उस सर्वोच्च पद पर पहुँचने वाला व्यक्ति महत्त्वपूर्ण तो हो सकता है लेकिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महापुरुष नहीं। उच्च श्रेणी के महापुरुष जार्ज वाशिंगटन अथवा अब्राहम लिंकन ही माने जा सकते हैं। इस अंतर का कारण केवल यही है कि जार्ज वाशिंगटन ने अपने पूरे जीवन को लगाकर और अपार संघर्ष करने के बाद अमेरिका का निर्माण तथा संचालन किया था। अब्राहम लिंकन और उस पद में जमीन-आसमान का अंतर था। तथापि साधनहीन एक लकड़हारे के बेटे लिंकन ने अपने पुरुषार्थ, अध्यवसाय तथा लगन के साथ ही असंख्य बाधाओं, विपत्तियों, असफलताओं, विरोधों, संकटों और कठिनाइयों के बावजूद भी हिम्मत न हारी, न भय माना और न निराशा को पास आने दिया। वे निरंतर श्रेयपथ पर विरोध-बाधाओं से लड़ते हुए आगे बढ़ते गए और राष्ट्र के उस सर्वोच्च पद पर पहुँचे जो उनकी स्थिति को देखते हुए असंभव कहा जा सकता था। महापुरुषत्व का मानदंड पद अथवा स्थिति नहीं है। उसका मानदंड वह कठिनाई तथा विपत्ति है जो वहाँ तक पहुँचने में आई होती है। अपने श्रेयपथ पर जो जितना ही कष्ट-सहिष्णु और साहसी रहता है, जितनी अधिक कठिनाइयाँ सहन कर सफलता पाता है, वह उसी अनुपात से महापुरुष माना जाता है।

श्रेयपथ पर कठिनाइयों का आना बहुत जरूरी है। यदि उन्नति-प्रगति का पथ सरल हो, श्रेय और लक्ष्य यों ही आसानी से मिल जाया करें तो उसका कोई महत्त्व ही न रह जाए। यह तो पकी-पकाई रोटी खा लेने के समान ही सस्ता और सामान्य काम हो जाए। ऐसी सरल सफलता पाने पर उसमें न तो आनंद का लेश रह जाएगा और न वह आत्मगौरव जो उस स्थिति में अपेक्षित हो जाता है। लक्ष्य का महत्त्व कठिनाइयों से और पुरुष का गौरव संकट वन को पार कर लक्ष्य पाने में ही होता है।

कठिनाइयों का मानव जीवन में बड़ा महत्त्व तथा उपयोग है। किसी को उनसे घबराना नहीं चाहिए। उन्हें कागज का शेर समझकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

टक्कर लेने और विजय पाने के लिएं प्रस्तुत रहना चाहिए। कठिनाइयाँ ही मानव को महामानव और पुरुष को महापुरुष बनाती हैं।

उतार-चढ़ावों से उद्विग्न न हों

दूसरे व्यक्ति वह होते हैं जो बात-बात पर चिढ़ते और उद्विग्न होते हैं। जरा-जरा सी बात पर दुखी होना बहुत से लोगों का स्वभाव होता है। यह स्वभाव किसी प्रकार भी वांछनीय नहीं माना जा सकता। मनुष्य आनंदस्वरूप है, उसका दुखी होना क्या? उसे तो हर समय प्रसन्न, आनंदित तथा उत्साहित ही रहना चाहिए। वही उसके लिए अवांछनीय है और यही जीवन की विशेषता है। इस स्वभाव के अतिरिक्त लोग तब तो अवश्य ही दुखी रहने लगते हैं, जब ये किसी उच्च स्थिति से नीचे उतर आते हैं। इस दशा में वे अपने दुःखावेग पर नियंत्रण नहीं कर पाते और फूल जैसे जीवन में ज्वाला का समावेश कर लेते हैं। जबकि उस उतार की स्थिति में भी दुःख-शोक की उपासना करना अनुचित है।

उतार की स्थिति में दुखी होना तभी ठीक है, जब वह उतार-पतन के रूप में घटित हुआ हो। और यदि उसका घटना नियति के नियम 'परिवर्तन', ईश्वर की इच्छा, प्रारब्ध अथवा दुष्टों की दुरभिसंधियों के कारण हुआ हो तो कदापि दुखी न होना चाहिए। तब तो दुःख के स्थान पर सावधानी को ही आश्रित करना चाहिए। पतन के रूप में उतार का घटित होना अवश्य खेद और दुःख की बात है। उदाहरण के लिए किसी परीक्षा को ले लीजिए। यदि परीक्षार्थी ने अपने अध्ययन, अध्यवसाय और परिश्रम में कोताही रखी है,समय पर नहीं जागा, आवश्यक पाठ आत्मसात नहीं किए, गुरुओं के निर्देश और परामर्शों पर ध्यान नहीं दिया, अपना उत्तरदायित्व अनुभव नहीं किया और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असावधानी तथा लापरवाही बरती है तो उसका फेल हो जाना खेद, दुःख व आत्महीनता का विषय है। उसे अपने उस किए का दुःखरूपी दंड मिलना ही चाहिए। वह इसी योग्य था। उसके साथ न किसी की सहानुभूति होनी चाहिए और न उसे सांत्वना और आश्वासन का सहयोग ही मिलना चाहिए।

किंतु उस पुरुषार्थी विद्यार्थी का दुःख से अभिभूत होना उचित नहीं, जिसने पूरी मेहनत की है और पास होने की सारी शर्तों का निर्वाह किया है। बात अवश्य कुछ उलटी लगती है कि जिसने परिश्रम नहीं किया, वह तो अनुत्तीर्ण होने पर दुखी हो और जिसने खून-पसीना एक करके तैयारी की, वह असफल हो जाने पर दुखी न हो। किंतु हितकर नीति यही है कि योग्य विद्यार्थी को असफलता पर दुःख नहीं होना चाहिए। इसलिए कि उसके सामने उसका उज्ज्वल भविष्य होता है। दुःख और शोक से अभिभूत हो जाने पर वह निराशा के परदे में छिप सकता है।

अयोग्य विद्यार्थी का न तो कोई वर्तमान होता है और न भविष्य। वह निकम्मा, चाहे दुखी हो, चाहे प्रसन्न कोई अंतर नहीं पड़ता। इस प्रकार पतन द्वारा पाई असफलता तो दुःख का हेतु है, किंतु पुरुषार्थ से अलंकृत प्रयत्न की असफलता तो दुःख-खेद का नहीं; चिंतन, मनन और अनुभव का विषय है। आशा, उत्साह, साहस और धैर्य की परीक्षा का प्रसंग है। प्रयत्न की असफलता स्वयं एक परीक्षा है। मनुष्य को उसे स्वीकार करना और उत्तीर्ण करना ही चाहिए।

प्रायः आर्थिक उतार लोगों को बहुत दुखी बना देता है। जिसका लंबा-चौड़ा व्यापार चलता हो। लाखों रुपये वर्ष की आमदनी होती हो, सहसा उसका रोजगार ठप हो जाए, कोई लंबा घाटा पड़ जाए, हैसियत बिगड़ जाए और वह असाधारण से साधारण स्थिति में आ गिरे तो वह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अवश्य ही दुखी और शोकग्रस्त रहने लगेगा। फिर भी इस आर्थिक उतार का शोक करना उचित नहीं। क्योंकि शोक करने से स्थिति में सुधार नहीं हो सकता। यदि शोक करने और दुखी रहने से स्थिति में सुधार की आशा हो तो एक बार शोक करना और दुखी रहना उस स्थिति में किसी हद तक उचित कहा जा सकता है। किंतु यह सभी अच्छी तरह से जानते हैं कि विपन्नता का उपचार दुखी रहना नहीं, बल्कि उत्साहपूर्वक पुरुषार्थ करना ही है तथापि लोग उलटा आचरण करते हैं। यह कम खेद की बात नहीं है।

संपन्नता से विपन्नता में आ जाने पर लोग क्यों दुखी रहते हैं? इसके अनेक कारण होते हैं। इसका एक कारण तो है अपनी वर्तमान स्थिति से विगत स्थिति की तुलना करना। दूसरा कारण है, दूसरों की संपन्न स्थिति को सामने रखकर अपनी स्थिति देखना। तीसरा कारण है, सामाजिक अप्रतिष्ठा की आशंका करना। चौथा कारण है, लज्जा और आत्महीनता का भाव रखना और पाँचवाँ कारण है, विगत वैभव का व्यामोह। यह और इसी प्रकार के अन्य कारणोंवश लोग अपने आर्थिक उतार पर दुखी और शोकग्रस्त रहा करते हैं। किंतु यदि इन कारणों पर गहराई से विचार किया जाए तो पता चलेगा कि इन कारणों को सामने रखकर अपनी विपन्नता पर शोक करना बड़ी हलकी और निरर्थक बात है। इनमें से कोई कारण तो ऐसा नहीं, जिसे शोक का उचित संपादक माना जा सके।

अपनी वर्तमान स्थिति से विगत स्थिति की तुलना करने से क्या लाभ? अतीतकाल की वह स्थिति जो वैभवपूर्ण थी, आज लौटकर नहीं आ सकती। हाँ उसकी तरह की स्थिति वर्तमान में बनाई अवश्य जा सकती है। किंतु यह संभव तभी होगा, जब अतीत का रोना छोड़कर वर्तमान के अनुरूप साधनों का सहारा लेकर परिश्रम और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुरुषार्थ किया जाए। केवल अतीत की याद कर-करके दुखी होने से कोई लाभ न बनेगा। जब मनुष्य अपने वैभवपूर्ण अतीत का चिंतन करके इस प्रकार सोचता रहता है तो उसके हृदय में एक हूक उठती रहती है—एक समय ऐसा था कि हमारा कारोबार जोरों से चलता था। लाखों रुपयों की आय थी। हजारों आदमी अधीनता में काम करते थे। बड़ी सी कोठी और कई हवेलियाँ थीं, मोटरकार में चलते थे। मनमाने ढंग से रहते और व्यय करते थे। लेकिन आज यह हाल है कि कारोबार बंद हो गया है। आय का मार्ग नहीं रह गया। दूसरों की मातहती की नौबत आ गई है, कोठियाँ और हवेलियाँ बिक गईं। मोटरकार चली गई। हम एक गरीब आदमी बन गए। अब तो यह जीवन ही बेकार है। इस प्रकार का चिंतन करना अपने जीवन में निराशा और दुःख को पाल लेना है।

यदि अतीत का चिंतन ही करना है तो इस प्रकार करना चाहिए। हमने इस प्रकार के अमुक-अमुक काम किए थे जिससे इस-इस तरह की उन्नति हुई थी। उन्नति के इस मार्ग में इस-इस तरह के विघ्न आए थे जिसको हमने इस नीति द्वारा दूर किया था। इस प्रकार का चिंतन करने से मनुष्य का सफल स्वरूप ही सामने आता है और आगे उन्नति करने के लिए प्रेरणा पाता है। विचारों का प्रभाव मनुष्य के जीवन पर बड़ा गहरा पड़ता है। जो व्यक्ति अपनी अवनति और अनिश्चित भविष्य के विषय में ही सोचता रहता है, उसका जीवनचक्र प्रायः उसी प्रकार से घूमने लगता है। इसके विपरीत जो अपनी उन्नति और विकास का चिंतन किया करता है, उसका भविष्य उज्ज्वल और भाग्य अनुकूलतापूर्वक निर्मित होता है।

मनुष्य की चिंतन-क्रिया बड़ी महत्त्वपूर्ण होती है। चिंतन को यदि उपासना की संज्ञा दे दी जाए तब भी अनुचित न होगा। जो उपासना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करते हैं, उन्हें अनुभव होगा कि जब वे अपना ध्यान परमात्मा में लगाते हैं तो अपने अंदर एक विशेष प्रकार का प्रकाश और पुलक पाते हैं। उन्हें ऐसा लगता है, मानो परमात्मा की करुणा उनकी ओर आकर्षित हो रही है। वह कल्याणकारी अनुभव उस उपासना, उस चिंतन अथवा उन विचार का ही फल होता है, जिनके अंतर्गत कल्याण का विश्वास प्रवाहित होता रहता है।

जिस प्रकार का विश्वास और जिस प्रकार के विचार लेकर मनुष्य अपने भविष्य के प्रति उपासना करता है, उसी प्रकार के तत्त्व उसकी जीवन-परिधि में सजग तथा सक्रिय हो उठते हैं। अतएव मनुष्य को सदैव ही कल्याणकारी चिंतन ही करना चाहिए, निराशापूर्ण चिंतन जीवन के उत्थान और विश्वास के लिए अच्छा नहीं होता।

दुःख करने से लाभ क्या?

दुःख मानने से दुःख के कारण का निवारण नहीं हो सकता। दुःख के कारण उद्विग्न और मलिन रहने के कारण मनःशक्तियाँ नष्ट होती हैं। अधोगत व्यक्ति के भौतिक साधन प्रायः नगण्य हो जाते हैं। उस स्थिति में इसके पास मनोबल के सिवाय अन्य कोई साधन नहीं रह जाता। मनोबल का साधक कुछ कम बड़ा साधक नहीं होता। मनोबल के बने रहने पर मनुष्य में प्रसन्नता, विश्वास और उत्साह बना रहता है। इन गुणों को साथ लेकर जब किसी स्थान पर व्यवहार किया जाता है तो दूसरों पर उसके धैर्य, सहिष्णुता और साहस का प्रभाव पड़ता है। लोग उसे एक असामान्य व्यक्ति मानने लगते हैं। उन्हें विश्वास रहता है कि इसको दिया हुआ सहयोग सार्थक होगा। यह परिस्थितियों से हार न मानने वाला दृढ़ पुरुष है। इस प्रतिक्रिया से लोग उस व्यक्ति की ओर आकर्षित हो उठते हैं,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार उपासक की ओर परमात्मा की करुणा आकर्षित करती है।

विगत वैभव का सोच करना किसी प्रकार भी उचित नहीं। क्योंकि अतीत का चिंतन न तो वर्तमान में कोई सहायता करता है और न भविष्य का निर्माण। बल्कि वह उस व्यामोह को और भी सघन तथा दृढ़ बना देता है जिसके अधीन मनुष्य विगत वैभव का सोच किया करते हैं। उत्थान अथवा अवनति के मायाजाल से बचने के लिए आवश्यक है कि उनके प्रति व्यामोह के अंधकार से बचे रहा जाए। इस सत्य में तर्क की जरा भी गुंजाइश नहीं है कि संसार परिवर्तन के चक्र से बँधा हुआ घूम रहा है। यहाँ पर कोई भी सदैव एक जैसी स्थिति के प्रति आश्वस्त रहने का अधिकार नहीं रखता। उसे परिवर्तन का अटूट नियम सहन ही करना पड़ेगा। यह सोचकर इस सत्य को स्वीकार करना ही होगा कि पहले गरीब थे फिर अमीरी आई और अब इसी चक्र के अनुसार पुनः गरीबी आ गई। पुनरपि यह निश्चित है कि यदि पूर्ववत पुरुषार्थ का प्रमाण दिया जाए तो संपन्नता निश्चित है। इस सहज संयोग में रहते हुए संपन्नता–विपन्नता से विचलित होना किसी प्रकार भी बुद्धिसंगत नहीं है।

किन्हीं विगतमान चीजों के प्रति दुःख होने का कारण यह है कि व्यामोह के वशीभूत मनुष्य उससे अपना आत्मभाव स्थापित कर लेता है। सोचने की बात है कि जब यह संसार ही हमारा नहीं है, यह शरीर तक हमारा नहीं है तो यहाँ की किसी चीज के साथ आत्मभाव स्थापित कर लेने में क्या बुद्धिमत्ता है ? एक दिन जब मनुष्य खुद ही सबको छोड़कर चला जाता है तो यदि कोई चीज उसे छोड़कर चली जाती है तो उसमें दुःख की क्या बात है। यह संसार और उसकी दृश्यमान अथवा अदृश्यमान सारी चीजें एकमात्र परमानंद की हैं। उसके सिवाय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी भी व्यक्ति का यहाँ की किसी चीज पर अधिकार नहीं है। जिसे जो कुछ मिलता है, वह सब परमात्मा का दिया होता है।

मनुष्य की बुद्धिमानी इसी में है कि वह इस सत्य को स्वीकार करे और इस बात के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए कि परिवर्तन के नियम के अंतर्गत उससे कोई भी चीज किसी समय ली जा सकती है। इस सत्य में विश्वास रखने वाले को व्यामोह का कोई दोष नहीं लगने पाता और वह संपत्ति तथा विपत्ति में सदा समभाव रहता है।

धैर्यवान पुरुषसिंह

विशेषकर यदि हम कोई महत्त्वपूर्ण कार्य करना चाहते हैं तो उसमें अनेक आपत्तियों का मुकाबला करने के लिए हमें तैयार ही रहना चाहिए। अनेक व्यक्ति इसी डर के मारे भारी काम में हाथ नहीं डालते। संभव है, वे इस जीवन में दु:खों से बच जाएँ। पर वे किसी प्रकार की प्रगति-उन्नति भी नहीं कर सकते। उनका जीवन कीड़े-मकोड़ों से बढ़कर नहीं होता।

जिसने शरीर धारण किया है उसको सुख-दु:ख दोनों का ही अनुभव करना होगा। शरीरधारियों को केवल सुख ही सुख या केवल दु:ख ही दु:ख कभी भी प्राप्त नहीं हो सकता। जब यही बात है,शरीर धारण करने पर दु:ख-सुख दोनों का ही भोग करना है तो फिर दु:ख में अधिक उद्विग्न क्यों हुआ जाए? दु:ख-सुख तो शरीर के साथ लगे रहते हैं। हम धैर्य धारण करके उनकी प्रगति को ही क्यों न देखते रहें! जिन्होंने इस रहस्य को समझकर धैर्य का आश्रय ग्रहण किया है, संसार में वे ही सुखी समझे जाते हैं।

धैर्य की परीक्षा सुख की अपेक्षा दु:ख में ही अधिक होती है। दु:ख की भयंकरता को देखकर विचलित होना प्राणियों का स्वभाव है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किंतु जो ऐसे समय में भी विचलित नहीं होता, वही 'पुरुषसिंह' धैर्यवान कहलाता है। आखिर हम अधीर होते क्यों हैं? इसका कारण हमारे हृदय की कमजोरी के सिवा और कुछ भी नहीं है। इस बात को सब कोई जानते हैं कि आज तक संसार में ब्रह्मा से लेकर कीड़े-मकोड़ों तक संपूर्ण रूप से सुखी कोई नहीं हुआ है। सभी को कुछ न कुछ दुःख अवश्य हुए है। फिर भी मनुष्य दुःखों के आगमन से व्याकुल होता है तो उसकी कमजोरी ही कही जा सकती है।

महापुरुषों की यह विशेषता होती है कि दुःखों के आने पर वे हमारी तरह अधीर नहीं हो जाते। उन्हें प्रारब्ध कर्मों का भोग समझकर वे प्रसन्नतापूर्वक सहन करते हैं। पांडव दुःखों से कातर होकर वे अपने भाइयों के दास बन गए होते, मोरध्वज पुत्र शोक से दुखी होकर मर गए होते, हरिश्चंद्र राज्य के लोभ में अपने वचनों से फिर गए होते, राजा शिवि ने यदि शरीर के कटने के दुःख से कातर होकर कबूतर को बाज के लिए सुपुर्द कर दिया होता तो इनका नाम अब तक कौन जानता? वे भी असंख्य नरपतियों की भाँति काल के गाल में चले गए होते। किंतु इनका नाम अभी तक ज्यों का त्यों जीवित है, इसका एकमात्र कारण उनका धैर्य ही है।

अपने प्रियजन के वियोग से हम अधीर हो जाते हैं। क्योंकि वह हमें छोड़कर चल दिया। इस विषय में अधीर होने से क्या काम चलेगा? क्या वह हमारी अधीरता को देखकर लौट आएगा? यदि नहीं तो हमारा अधीर होना व्यर्थ है। फिर हमारे अधीर होने का कोई समुचित कारण भी तो नहीं, क्योंकि जिसने जीवन धारण किया है, उसे मरना तो एक दिन है ही। जो जन्मा है वह मरेगा भी। संपूर्ण सृष्टि के पितामह ब्रह्मा हैं। चराचर सृष्टि उन्हीं से उत्पन्न हुई। अपनी आयु समाप्त होने पर वे भी नहीं रहे। क्योंकि वे भी भगवान विष्णु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के नाभि कमल से पैदा हुए हैं। अतः महाप्रलय में वे भी विष्णु के शरीर में विलीन हो जाते हैं। जब यह अटल सिद्धांत है कि जायमान वस्तु का नाश होगा ही; तो फिर हम अपने उस प्रिय का शोक क्यों करें? उसे तो मरना ही था, आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों। सदा कोई जीवित रहा भी है जो वह रहता। जो जहाँ से आया था, चला गया। एक दिन हमें भी जाना है। इसलिए जो दिन शेष हैं उन्हें धैर्य के साथ उस परमपिता परमात्मा के गुणों के चिंतन में लगाएँ।

शरीर को व्याधि होते ही हम विकल हो जाते हैं। विकल होने से आज तक कोई रोगमुक्त हुआ है! यह शरीर तो व्याधियों का घर है। जाति, आयु, भोग को साथ लेकर ही तो यह शरीर उत्पन्न हुआ है। पूर्व जन्म के जो भोग हैं, वे तो भोगने ही पड़ेंगे।

भाग्य को बुरा मत कहिए

संसार में ऐसे व्यक्तियों की भी कमी नहीं है जो अपनी हीनावस्था का कारण अपने दुर्भाग्य को बतलाया करते हैं। उनसे बात कीजिए और पूछिए कि भाई, आप जो इस प्रकार विपन्नता में जीवन काट रहे हैं, इसमें आपको संतोष किस प्रकार हो रहा है और इस दशा को बदलने के बजाय हाथ पर हाथ धरे क्यों बैठे हुए हैं?

इस सहानुभूति के उत्तर में उनका कथन होगा—"क्या करें, हमारा भाग्य ही खराब है,परमात्मा ने हमारे भाग्य में दुःख-दरद ही लिखे हैं, सो भोग रहे हैं। यदि हमारे भाग्य में सुख-सुविधा होती तो क्या अन्य लोगों की तरह हमारा जन्म भी अमीर साधन संपन्न घर में नहीं होता? हम जानते हैं कि हमारा भाग्य खराब है। इसलिए कोई उद्योग करना भी बेकार है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोगों का ऐसा निराशापूर्ण उत्तर सुनकर तरस आए बिना नहीं रहता। यह भाग्य एवं भविष्य के 'जानपांडे' उपाय एवं उद्योग की अपेक्षा विपन्नावस्था में अधिक विश्वास करते हैं। उनका गरीब होना वास्तव में उतना दुर्भाग्यपूर्ण नहीं है, जितना कि उनका यह निराशापूर्ण अंधविश्वास।

कितने आश्चर्य की बात है कि भाग्य के अंधविश्वासी अपनी दशा बदलने का उपाय किए बिना ही बड़ी आसानी से यह मान लेते हैं कि गरीबी तो उनका प्रारब्ध भोग है। वह किसी उपाय अथवा उद्योग से नहीं बदली जा सकती। इसलिए इसके विरोध में डटकर मोर्चा लेना बेकार है। इस प्रकार के भाग्य-ज्ञाताओं को जरा सोचना चाहिए कि जब तक उन्होंने परिश्रम एवं पुरुषार्थ नहीं किया, तब तक उन्हें यह किस प्रकार पता चल गया कि कोई भी उद्योग सफल न होगा।

अपनी समुन्नति में प्रतिकूल संयोगों अथवा भाग्यहीनता का हेतु मानना, अपने को भ्रम में रखना और आत्मविश्वास को धोखा देना है। अपने साथ इस प्रकार का विश्वासघात करने वाले निश्चय ही जीवन में सफलता का सौभाग्य नहीं ले पाते। अपने से विश्वासघात करने की निकृष्ट भावना को छोड़कर उन्हें आँख फैलाकर चारों ओर देखना चाहिए और समझने की कोशिश करनी चाहिए कि आज जो उनके सामने ही उन्नति के शिखर पर बढ़ गए हैं और दिन-दिन अग्रसर होते जा रहे हैं, वे सब क्या जन्मजात सुविधाओं के अधिकारी रहे हैं। इतिहास साक्षी है कि संसार के प्रसिद्ध व्यक्तियों में से अधिकांश ऐसी कठिन परिस्थितियों में जन्मे, ऐसी वज्र-विवशताओं में पले और ऐसे विकट-विकट विरोधों में आगे बढ़े हैं कि ऐसी प्रतिकूलताओं की छाया भी उन जैसे निराशावादियों पर पड़ जाती तो कदाचित उन्होंने रो-रोकर जान ही दे दी होती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हिम्मत हारकर बैठे व्यक्तियों को सोचना चाहिए कि उनके आस-पास उन्हीं जैसी परिस्थितियों में जो लोग रह रहे हैं इनमें से आगे चलकर न जाने कितने लोग धनवान, विद्वान, कलाकार तथा जन नेता आदि बनकर जीवन को सफल बनाएँगे, तब क्या कारण है कि वे वैसा नहीं बन सकते। कारण केवल यही है कि वे उद्योगशील आशावादी उन जैसे दुर्भाग्यवादी नहीं हैं। वे बलपूर्वक बदलने में विश्वास रखते हैं। यदि जन्मजात सुविधाएँ ही उन्नति एवं महानता का कारण होती तो निश्चय ही संसार के सारे साधन संपन्न व्यक्तियों को चाँद-सूरज की तरह चमकना चाहिए था। किंतु ऐसा देखा नहीं जाता। कठिन परिस्थितियाँ अथवा प्रतिकूल संयोग ही किसी की उन्नति एवं विकास के विरुद्ध विजयी रहे होते तो न कोई गरीब से अमीर बन पाया होता और न निम्न से महान। और न आगे ही कोई ऐसा परिवर्तन प्राप्त कर सकने की संभावना ही रख सकता। लोग प्रतिकूलताओं को जीतकर आगे बढ़े हैं, बढ़ रहे हैं और भविष्य में भी बढ़ते जाएँगे, किंतु आत्मविश्वास एवं पुरुषार्थ के बल पर।

अपनी दयनीयता का दोष परमात्मा को देने से कहीं अच्छा है कि अपने अपरिश्रमी स्वभाव को दिया जाए। वह समदर्शी परमपिता परमात्मा कभी किसी के साथ अन्याय नहीं करता। उसके पास देने के लिए जो दया का कोष है, उसका भाग वह सबको पात्रता के अनुसार न्यायपूर्वक ही देता है। जगत में आकर जो पुरुषार्थी एवं आत्म-विश्वासी व्यक्ति अपनी पात्रता की वृद्धि कर लेते हैं, निश्चय ही वे उसकी कृपा का अधिक अंश पा लेते हैं। परमात्मा मनुष्य के प्रयत्न पात्र को अपनी कृपा से लबालब भरा रहता है। अब जो अपने प्रयत्न को छोटा कर लेता है, कृपा का अंश उसमें से कम हो जाता है और जो उसको जितना विशाल बना लेता है उसकी कृपा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का उतना ही अंश उसमें बढ़ जाता है। अपनी प्रयत्नहीनता को दोष न देकर परमात्मा को दोष देना उसकी न्यायशीलता में एक अक्षम्य अशिष्टता तथा धृष्टता है। यह उनकी इस दुष्ट भावना का भी फल होता है कि आशा की ओर से अंधे होकर निराशा का हाथ पकड़े हुए जीवन का मार्ग टटोल कर ठोकरें खाते-फिरते हैं। यह उनकी इस दुष्टता का ही परिणाम है कि उनका विश्वास सौभाग्य के प्रति होने के स्थान पर दुर्भाग्य के प्रति दृढ़ रहता है। अपना कल्याण चाहने वाले प्रत्येक व्यक्ति का पावन कर्त्तव्य है कि वह परमात्मा को दोष देने के बजाय, उसकी कृपा में न्यूनता खोजने के बजाय अपने निष्क्रिय स्वभाव, अनुद्योगी प्रवृत्ति एवं निराशापूर्ण विश्वासों को दोष दे और अपनी कमियों, त्रुटियों एवं न्यूनताओं की खोज करे और उन्हें दूर करने का प्रयत्न करे। मनुष्य जब तक भी अपनी विवशताओं की खोज अपने में न करके उनका दोष दूसरों को देता रहेगा यों ही दयनीय एवं दुर्भाग्यपूर्ण जीवन बिताना रहेगा।

हारिए मत, जीतने की ही बात सोचिए

जो वस्तु या विषय अनुकूल स्थान पा लेता है, वह बहुत शीघ्र पल्लवित तथा स्थायी हो जाता है। अन्नों के विभिन्न प्रकार होते हैं। किंतु प्रत्येक अन्न हर क्षेत्र में नहीं हो सकता। हर बीज को फलीभूत होने के लिए उसे अनुकूल तत्त्वों वाली भूमि की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि किसी भूमि पर गेहूँ, चना होता है तो किसी भूमि पर चावल, चना, मक्का, ज्वार आदि। किसी बाग की भूमि आम के लिए अनुकूल होती है तो किसी की अमरूद के लिए। अनुकूल क्षेत्र परिस्थिति पाए बिना किसी बात अथवा विषय का विकास एवं दायित्व संभव नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यदि हमारे शरीर में रोगों के अनुकूल हानिकारक तत्त्व मौजूद न हों तो रोगों की शक्ति नहीं कि वे हमको आक्रांत कर सकें। इसी प्रकार यदि अनिष्ट अथवा अशुभ के अनुकूल निर्बलता हमारे मन में न रहे तो उनका कोई प्रभाव हम पर नहीं पड़े। बहुत बार एक जैसी हानि अथवा अप्रियता से घिरकर दो व्यक्तियों में से एक की दशा दयनीय हो जाती है। उसकी हिम्मत तथा हौसला समाप्त हो जाता है और वह प्रतिकूलता के समक्ष आत्मसमर्पण करके सदा को निष्क्रिय बन बैठता है। इसके प्रतिकूल दूसरा व्यक्ति उस अनिष्ट से जरा भी प्रभावित नहीं होता। दु:खद परिस्थिति हवा के एक गर्म झोंके की तरह उसे ऊपर से छूकर निकल जाती है। न उसका साहस टूटता है और न उसे निराशा होती है। वह उसी हिम्मत तथा उत्साह से काम करता रहता है और अंत में विजयी होता है। इस विषय का केवल एक ही कारण होता है और वह है परिस्थितियों के योग्य मानसिक अनुकूलता। निराश व्यक्ति की मनोभूमि निर्बल होने से घटना उसको सहज ही दबा लेती है और सारी शक्ति को व्यर्थ कर निष्क्रिय बना देती है। हार न मानने वाले व्यक्ति की मन:स्थिति उस अप्रियता के अनुकूल नहीं होती इसलिए वह उस पर प्रभाव नहीं डाल पाती। उसकी सारी शक्तियाँ सक्रिय तथा समर्थ बनी रहती हैं। फलत: न तो वह निराश होता है और न निरुत्साहित, यथावत कार्य करता रहता है और अंत में प्रतिकूलता पर नियंत्रण कर विजयी होता है। मनुष्य की बाह्य हार-जीत बहुत कुछ मानसिक हार-जीत पर निर्भर रहती है। बाहर से असफलता मिलने पर भी यदि हृदय से हारा न जाए तो कोई कारण नहीं कि हमारा नाम पराजितों में लिखा जा सके। मानसिक हार-जीत के कारण बहुत से लोग जीतकर हार जाते हैं और बहुत से हारकर जीत जाते हैं। कितनी ही विषम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिस्थिति क्यों न आ जाए, संकट की घनी घटाएँ क्यों न घिर रही हों, कितना ही अंधकार क्यों न दिखाई देता हो, मन से मत हारिए। हृदय से विजय का, सफलता एवं निस्तार का तेजस्वी विचार कभी भी तिरोहित मत होने दीजिए। संसार का ऐसा कोई संकट नहीं जो आपके पैर मैदान से उखाड़ दे।

अधिकतर होता यह है कि लोग एक अंश बाहर से हारते ही दस अंश भीतर से हार जाते हैं। उनकी विचारधारा जिसे उनका साथ देना चाहिए था प्रतिकूलताओं के पक्ष में हो जाती है। प्रतिकूल दिशा में बहने लगती है। संकट के समय में उसे सोचना तो इस प्रकार चाहिए कि यह संकट कुछ नहीं है। यह तो मानव जीवन में जाते रहने वाले धूप-छाँह का खेल है। यह साधारण सी असफलता हमारी अजेय आशा को विचलित नहीं कर सकती, मुझ में शक्ति, साहस तथा संघर्षशीलता की कमी नहीं है। मैं निरंतर पुरुषार्थ तथा धैर्य के आधार पर अपना हारा दाँव जीत लूँगा। किंतु सोचने इस प्रकार लगता है—"लीजिए काम करते ही हानि होने लगी, शायद मेरा भाग्य खराब है, समय और नक्षत्र हमारे प्रतिकूल हैं। जब इस प्रकार कदम-कदम पर असफलता मिलेगी, तब हमारा आगे बढ़ सकना कैसे संभव हो सकता है? हम पर तो दैवी कोप मालूम होता है, हममें इतनी शक्ति कहाँ कि दुर्देव से टक्कर ले सकें।" इस प्रकार की परस्पर विरोधी—अनुकूल-प्रतिकूल विचारधाराओं का परिणाम यही तो है कि एक हिम्मत से मैदान में डटा रहता है, दूसरा मैदान छोड़ जाता है। स्वाभाविक है कि एक जीते और दूसरा हारे।

मनुष्य स्वभाव से ही अपनी दशा तथा स्थिति का स्वामी बनने के लिए बनाया गया है न कि उनका दास बनकर रहने के लिए। यदि अन्य पशु-पक्षियों की तरह ही अनुकूलता में नाचने-कूदने और प्रतिकूलता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में भागने, रोने, चिल्लाने, घबराने, उद्विग्न होने लगे तो उसकी विशेषता ही क्या रह जाए! उसकी बुद्धि, विवेक तथा संघर्ष-शक्तिमत्ता ही क्या रह जाए! किंतु खेद है कि मनुष्य सारी शक्तियों तथा क्षमताओं के रहते हुए भी अपनी मानसिक निर्बलता तथा प्रतिकूल विचारधारा के कारण हार मान लेता है। इसका कारण यही समझ में आता है कि ऐसे कायर लोग अपने मनुष्य होने का शायद ध्यान नहीं रखते अथवा मानवीय विभूतियों को निरुपयोगी समझते हैं। परिस्थितियों से हारने-जीतने की शरम व गैरत उन्हें नहीं होती।

इस विषय में संसार के प्रसिद्ध घूँसेबाज कारवेट का विचार कितना सत्य तथा उपयोगी है। वह कहता है—"हर घूँसेबाज के पास एकसे साधन होते हैं। दो हाथ, दो पाँव, एक धड़ और एक सिर। प्रतिस्पर्द्धी के घूँसे भी पाँच सात से अधिक नहीं पड़ते, फिर किसी एक के 'रुस्तमे हिंद' या 'रुस्तमे जमा' बन जाने का क्या कारण हो सकता है?" अपने इस प्रश्न का स्वयं ही जवाब देता हुआ वह आगे लिखता है—"जब तुम्हारे पैर इतने बेदम हो रहे हों कि तुम अखाड़े के एक कोने में चले जाने की सोच रहे हो तो एक मजबूत पकड़ और लड़लो। जब तुम्हारी भुजाएँ ऐसी शिथिल हो रही हो कि उन्हें उठाना मुश्किल मालूम देता हो, तो सारा साहस बटोरकर प्रतियोगी से एक बार और भिड़लो। जब तुम्हारी नाक से रक्त की धारा बह रही हो और आँखों के आगे अँधेरा छा रहा हो, जब तुम इतने लस्त-पस्त हो रहे हो कि बस यही जी चाहता कि प्रतिस्पर्द्धी तुम्हारे जबड़े पर दो घूँसे जमाकर तुम्हे चेतना लोक से बाहर भेज दे तो एक आखिरी टक्कर और ले लो। याद रखो जो मनोधनी एक आखिरी टक्कर और ले लेता है—एक पकड़ और लड़ लेता है, वह कभी पछाड़ नहीं खाता।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने क्षेत्र के अनुरूप कारवेट ने जो बात कही है, वह जीवन के हर क्षेत्र पर एकसमान लागू होती है। संघर्ष के प्रकार में अंतर हो सकता है, किंतु तथ्य में कोई अंतर नहीं। जीवन के सभी क्षेत्रों में असफलता, शिथिलता तथा निराशा के क्षण आते हैं। किंतु जिनकी मनोभूमि, जिनकी विचारधारा उतनी समर्थ नहीं होती है वे जल्दी ही मैदान छोड़ जाते हैं। यदि एक बार उनका शरीर रुकना भी चाहे और शायद टक्कर न लेने के योग्य भी हो तो भी उनका मन उन्हें लेकर भाग जाता है। किंतु स्थिर मन व्यक्ति बाहर से शिथिल हो जाने पर भी शारीरिक साधनों की निराशा के बावजूद भी मनोबल से लड़ता है और जीत प्राप्त कर लेता है।

इतना ही क्यों, यदि एक बार क्या दस बार भी असफलता क्यों न आए। परिस्थितिवश मैदान छोड़ना पड़े, तब भी अखाड़े से बाहर शरीर के साथ मन को भी हराकर मत जाइए। उस हार से शिक्षा लीजिए और आगे की जीत के लिए प्रयत्न कीजिए और मैदान में पूरी तैयारी के साथ उतरिए। आप अवश्य विजयी होंगे। यदि शरीर के साथ मन को भी हराकर चले गए तो आपके पास ऐसा कोई उपाय शेष न रह जाएगा, जिसके आधार पर आप आगामी विजय की तैयारी कर सकें। मानसिक अनुकूलता अथवा वैचारिक स्थिति का परिस्थितियों पर बहुत प्रभाव पड़ता है—इस सत्य को कभी विस्मरण न करना चाहिए।

यदि हमारा मन बलवान है, हमारे विचार हमारे साथ हैं, हमारी भावनाएँ शुभ तथा सृजनात्मक हैं तो हम पर प्रतिकूल परिस्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता और हम उस पर अवश्य नियंत्रण प्राप्त कर लेंगे। हमें चाहिए कि हम अपनी मनोभूमि को संघर्षों के समय पहाड़ की उस चट्टान की तरह दृढ़ तथा अपने अनुकूल बनाए रहें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिस पर आँधी-पानी का कोई प्रभाव बाहर से भले ही दृष्टिगोचर हो किंतु उसका प्रवेश अंतर में न हो सके।

परिवर्तन के साथ सामंजस्य बिठाना सीखें

नन्हे-नन्हे कीड़े-मकोड़े और पक्षियों में आत्मरक्षा की एक विचित्र आदत होती है। उन पर शत्रु वार करता है तो वे अपने को सूखी टहनी, पत्ती या मिट्टी के ढेले की शक्ल का बनाकर निर्जीव से हो जाते हैं। शत्रु की बुद्धि चक्कर काट जाती है और वह समझ लेता है कि शिकार हाथ से निकल गया। संकट टलते ही यह जीव फिर फुदकने लगते हैं। जीवन के प्रति अपनाया गया यही दृष्टिकोण सही है।

परिवर्तन संसार का स्वाभविक गुण है। यह एकरस कदापि नहीं रह सकता। ऋतुओं का परिवर्तन, रात-दिन, धूप-छाँह की अदल-बदल यही प्रकट करते हैं कि संसार की शोभा भी उसके परिवर्तनशील होने में है। हर परिवर्तन एक नवीन जिंदगी लेकर आता है। जब संसार ग्रीष्म में तपकर व्याकुल हो उठता है, तब बरसात उसका ताप दूर करके एक नवजीवन 'नए सुख' का संचार करती है। बरसात में नदियाँ जब बढ़ जाती हैं, रास्ते बंद हो जाते हैं, पानी गंदला हो जाता है, कीड़े-मकोड़े बढ़ जाते हैं, तब इनका निवारण करने के लिए शरद ऋतु आती है और बरसात से ऊबा हुआ मनुष्य पुनः एक नए जीवन का अनुभव करता है। इसी प्रकार जब जाड़ा प्राणलेवा बन जाता है, तब पुनः शीतरहित ऋतु का आगमन होता है। आशय यह है कि एकसी स्थिति में रहते संसार के प्राणी ऊबकर विरक्त न होने लगें, इसीलिए परमात्मा ने संसार में परिवर्तन का एक अनिवार्य नियम बना दिया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार का एक अंग होने से मनुष्य का जीवन भी परिवर्तनशील है। बचपन, जवानी, बुढ़ापा आदि का परिवर्तन, तृषा, तृप्ति, काम, आराम, निद्रा, जागरण तथा जीवन-मरण के अनेक परिवर्तन मानव जीवन से जुड़े हुए हैं। इसी प्रकार सफलता-असफलता तथा सुख-दुःख भी इसी परिवर्तनशील मानवजीवन के एक अभिन्न अंग हैं।

परिवर्तन जीवन का चिह्न है। अपरिवर्तन जड़ता का लक्षण है। जो जीवित है, उसमें परिवर्तन आएगा ही। इस परिवर्तन में ही रुचि का भाव रहता है। एकरसता हर क्षेत्र में ऊब और अरुचि उत्पन्न कर देती है।

कठिनाइयों का आगमन भी इसी परिवर्तनशीलता के ही अंतर्गत हुआ करता है। मानव जीवन संघर्षपूर्ण प्रक्रिया है। अधिकतर लोग संघर्ष को बुरा मानते हैं, उससे बचने का प्रयत्न करते हैं। किंतु यह संघर्ष ही मनुष्य जीवन के विकास एवं सफलता का कारण है। यदि संघर्ष न हो तो कोई शक्तिशाली, विद्वान, पुरुषार्थी अथवा परिश्रमी बनने का प्रयत्न ही न करे। स्पर्द्धारूपी संघर्ष ही मनुष्य को एकदूसरे से ऊँचा कलाकार, कार्यकर्त्ता तथा शिल्पकार बनने की प्रेरणा देता है। यदि मनुष्य को बिना श्रम किए भोजन मिल जाया करे, प्रकृति की कठोरता से संघर्ष किए बिना ही यदि उसकी आवश्यकताएँ पूरी हो जाया करतीं, तो मनुष्य कितना काहिल और निकम्मा होता, इसका अनुमान लगा सकना कठिन है।

प्राकृतिक कठोरताओं के संघर्ष से ही प्रेरित होकर मनुष्य ने जीवन में सुख-सुविधाओं के रूप में बड़ी-बड़ी सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का निर्माण कर डाला है। प्रकृति से पिछड़े हुए संघर्ष ने ही संसार में आश्चर्यचकित कर देने वाले शिल्पों को जन्म दिया है। संघर्ष संसार की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

न केवल स्वाभाविक प्रक्रिया, बल्कि परिवर्तन की तरह यह आवश्यक भी है। इसके बिना मनुष्य का विकास रुक जाता और भौचक्की कर देने वाली विज्ञान एवं ज्ञान की प्रगति न होती।

किंतु कितना आश्चर्य है कि मानव विकास की इस अनिवार्य आवश्यकता से न जाने मनुष्य क्यों डरता है? परिवर्तन से डरना और संघर्ष से कतराना मनुष्य की बहुत बड़ी कायरता है।

मनुष्य जब तक जीवित है, उसे परिवर्तनपूर्ण उतार-चढ़ाव और बनने-बिगड़ने वाली अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना ही होगा। दु:ख-सुख, लाभ-हानि, सफलता-असफलता, सुविधा एवं कठिनाइयों के बीच से गुजरना ही होगा। लाख चाहने और प्रयत्न करने पर भी वह इनको आने से नहीं रोक सकता। यह आएगी ही और मनुष्य को इनसे जूझना ही होगा।

यह बात दूसरी है कि कोई कायर इनकी मार खाकर रोता-चिल्लाता हुआ इनको पार करता है और कोई साहसी अपने आत्मबल एवं पुरुषार्थ के संबल का सहारा लेकर या तो इनको अपने अनुकूल बना लेता है या इनका मुख मोड़ देता है।

रोना-धोना, शोक, चिंता और विषाद करने से कोई परिस्थिति नहीं बदलती, कोई कठिनाई दूर नहीं होती। बल्कि वे कमजोर मनोभूमि पाकर और भी विकराल रूप में अपना तांडव करती हुई कायर के भय से मनोरंजन क्रिया करती हैं। जहाँ उनके ठहरने का समय एक दिन-दो दिन होता है, वहाँ वे महीनों-वर्षों के लिए अपना ठिकाना बना लेती हैं। रोना, झीकना, भयभीत अथवा भागना एक प्रकार से कठिनाइयों एवं आपत्तियों के प्रति आत्मसमर्पण करना है, और किसी शत्रु के सम्मुख आत्मसंमर्पण करने का जो फल होता है वही उसे भोगना पड़ता है। एक दुर्बल व्यक्ति का आत्मसमर्पण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाकर आपत्तियाँ उसका सर्वस्व हरण कर लेती हैं। उसकी मानसिक शक्तियों, आत्मिक बल, प्रसन्नता, आशा, उल्लास आदिक संपत्तियों को हड़पकर नितांत दरिद्र बना देती हैं।

परिवर्तन के नियम और संघर्ष में प्रबलता के कारण जब जीवन में कठिनाइयों, परेशानियों और आपत्तियों का आना अनिवार्य ही है, तब रोने–धोने, भागने, भयभीत होने के स्थान पर उनसे लड़ना और टकराना ही उचित मालूम होता है।

बिना कठिनाइयों के मनुष्य का पुरुषार्थ नहीं खिलता, उसके आत्मबल का विकास नहीं होता, उसके साहस और परिश्रम के पंख नहीं लगते, उसकी कार्यक्षमता का विकास नहीं होता। यदि कठिनाइयाँ न आएँ तो मनुष्य साधारण रूप से रेलगाड़ी के पहिये की तरह निरुत्साह के साथ ढुलकता चला जाए। उसकी अलौकिक शक्तियों, उसकी दिव्य क्षमताओं, उसकी अद्भुत बुद्धि और शक्तिशाली विवेक के चमत्कारों को देखने का अवसर ही न मिले। उसकी सारी विलक्षणताएँ, अद्भुत कलाएँ और विस्मयकारक योग्यताएँ धरती के गर्भ में पड़े रत्नों की तरह ही पड़ी–पड़ी निरुपयोगी हो जाती।

निस्संदेह यह आपत्तियों तथा कठिनाइयों की कृपा है जो कि मनुष्य अपनी शक्तियों तथा अपने स्वरूप को पहचान सका है। कठिनाइयाँ ही मनुष्य के मस्तिष्क को जगाती, उसकी आत्मा को प्रबुद्ध करती और उसको विकास के पथ पर अग्रसर करती हैं। मनुष्य को आपत्तियों से घृणा नहीं बल्कि प्रेम करना चाहिए, उनका आभार मानना चाहिए।

मनुष्य के ज्ञानवर्द्धन में कठिनाइयों का बहुत हाथ है। आपत्ति के समय ही मनुष्य को ठोस अनुभव होता है। आपत्तिकाल में ही उसे अपने–परायों की, मनुष्यता एवं पशुता की परख होती है। कठिनाइयाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा आपत्तियाँ ही संसार के वास्तविक रूप को उसके सामने प्रकट करती हैं। कठिनाइयाँ ही मनुष्य को अपने प्रति बहुत से भ्रमों को दूर कर देती हैं। आपत्ति के बीच अपनी दशा देखकर ही मनुष्य ठीक-ठीक समझ पाता है कि वह कितने पानी में है? बड़े-बड़े साहसी अपने को कायर और अपने को कायर तथा कमजोर समझने वाले देखते हैं कि उनमें तो काफी साहस है। इस प्रकार कठिनाइयाँ मनुष्य के लिए हर प्रकार से सहायक तथा उपयोगी ही होती हैं।

किंतु किसके लिए? क्या उनके लिए जो उनको देखते ही दुम-दबाकर भागते या रोते-चिल्लाते हैं। क्या आपत्तियों में जिनकी बुद्धि विकल एवं भ्रष्ट हो जाती है, मन का सारा साहस कूच कर जाता है? क्या उनके लिए जो भीरु हैं, सुकुमार हैं, असहिष्णु अथवा सुखलिप्सु हैं? नहीं, कठिनाइयों का सहन कर सकना निर्बल हृदय व्यक्ति के वश की बात नहीं है और जो उनको सहन नहीं कर सकता वह सिद्धि पाना तो दूर, उनसे लाभ उठाना तो क्या, उलटे उनमें जलकर भस्म ही हो जाएगा। आपत्तियों का झंझावात जहाँ नरसिंहों को झकझोर कर उनका प्रमाद दूर करके पुरुषार्थ के लिए खड़ा कर देता है, वहाँ शृगाल-शशकों को भयभीत करके जीवन रण में परास्त कर देता है।

आपत्तियाँ संसार का स्वाभाविक धर्म हैं। वे आती हैं और सदा आती रहेंगी। उनसे न तो भयभीत होइए और न भागने की कोशिश करिए, बल्कि अपने पूरे आत्मबल, साहस और शूरता से उनका सामना कीजिए। उन पर विजय प्राप्त करके ही जीवन में बड़ा से बड़ा लाभ उठाया जा सकता है।

कठिनाइयों के दो स्वरूप होते हैं—एक बाह्य परिस्थितियों के रूप में आने वाली कठिनाई, दूसरी आंतरिक स्वरूप में उपस्थित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होने वाली। साधारणतया लोग बाह्य कठिनाइयों की ही जानकारी रखते हैं। आंतरिक कठिनाइयों को कोई विरला ही समझ पाता है। वस्तुतः अंतःबाह्य दोनों के मूल में आंतरिक कठिनाइयाँ ही प्रमुख होती हैं। बाह्य कठिनाइयाँ आंतरिक कठिनाइयों की छाया मात्र ही होती हैं।

अनुकूल परिस्थितियाँ, साधन-सुविधा, मनुष्य के पतन का कारण बनती देखी गई हैं, जबकि विपरीत परिस्थितियों में, कठिनाइयों में भी लोगों ने आगे बढ़कर जीवन में उत्कृष्ट स्थिति प्राप्त की है। कठिनाइयों से भी लाभ उठाकर आगे बढ़ने, जीवन में सफलता प्राप्त करने लिए मनुष्य के दृष्टिकोण एवं उसके जीवनक्रम की बुनियाद में सुधार होना आवश्यक है।

अपने कर्त्तव्य धर्म की जानकारी, उसके प्रति अनन्य निष्ठा पैदा होना सफलता की प्राथमिक शर्त है। कर्त्तव्य की जानकारी और उसके प्रति निष्ठा से मनुष्य कृतसंकल्प होता है और इससे उसमें असाधारण शक्ति का स्त्रोत फूट पड़ता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य भारी से भारी कठिनाइयों को भी सहर्ष सहन करता है। कर्त्तव्य के लिए सर्वस्व लुटा देने को तैयार हो जाता है। हरिश्चंद्र, पांडव, नल, कर्ण, प्रताप, शिवाजी, गांधी आदि ने अपने कर्त्तव्य धर्म की रक्षा के लिए कितने कष्ट सहे, यह सभी जानते हैं। कर्त्तव्य का ध्यान रखने पर व्यक्ति को आंतरिक शक्ति मिल जाती है। जिससे वह मार्ग में आई कठिनाइयों को सहज ही सहन कर लेता है, जिससे उसकी शक्ति, साहस, कार्य क्षमता में दिनोदिन विकास होता जाता है। कर्त्तव्य में लगा हुआ व्यक्ति बाह्य कठिनाइयों पर क्रमशः विजय प्राप्त करता जाता है तो उसके साथ ही उसकी आंतरिक कठिनाइयाँ भी स्वतः ही हल होती चली जाती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्त्तव्य दृष्टि प्राप्त होने के पहले एवं बाद में भी सबसे बड़ी आवश्यकता है सक्रियता की। कर्त्तव्य को जानकर भी मनुष्य निष्क्रय रह सकता है। अतः इसके साथ ही आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य सक्रिय बना रहे। अकर्मण्यता की स्थिति में अनेकों ऊल जलूल विचार आते-जाते रहते हैं और इनसे मानसिक शक्तियों का विघटन होने लगता है। शक्तियों का बटवारा हो जाता है। खाली मन शैतान का घर होता है। मानसिक दुर्बलता से शक्तियों के विघटित हो जाने पर कठिनाइयों से लड़ना और भी कठिन हो जाता है।

कठिनाइयों से भागने की मनोवृत्ति कायरता है। इससे कठिनाई घटती नहीं, निरंतर बढ़ती ही जाती है। भागने वाले मनुष्य को चारों ओर से कठिनाइयाँ घेर लेती हैं। वह कहीं भी भागकर जाए, उनसे छुटकारा नहीं मिलता। कठिनाइयों से भागने वाले की आत्मिक शक्तियाँ कुंठित हो जाती हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि कठिनाइयों का डटकर मुकाबला किया जाए, उन्हें जीवन में सहर्ष स्वीकार किया जाए, वरण किया जाए। जो कठिनाई का सामना करने का निश्चय कर लेते हैं, उनको कठिनाई का भान ही नहीं होता। कब आई और कब चली गई, इसका ध्यान तक नहीं रहता उन्हें। कठिनाइयों का सामना करने से ही आत्म-शक्तियाँ जाग्रत होती हैं, उनका विकास होता है। यही कारण है कि साधन-सुविधा संपन्न घरानों में अधिकांश बच्चों का पर्याप्त विकास नहीं होता क्योंकि उनकी आवश्यकताएँ सरलता से पूरी हो जाती हैं। उनकी शक्तियों को संघर्ष का स्पर्श नहीं मिलता। दूसरी ओर संसार के अधिकांश महापुरुषों का प्रादुर्भाव कठिनाइयों के बीहड़ वनों में ही हुआ है।

कठिनाइयों को उनसे दूर भागकर-घबराकर दूर नहीं किया जा सकता। उनका खुलकर सामना करना ही बचने का सरल रास्ता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रसन्नता के साथ कठिनाइयों का वरण करना उनसे उत्पन्न घबराहट का सर्वोत्तम उपाय है। आंतरिक, मानसिक शक्तियों के विकसित होने का राजमार्ग है। संसार के अधिकांश महापुरुषों ने कठिनाइयों का स्वागत करके ही जीवन में महानता प्राप्त की है।

कठिनाइयों को देखकर मनुष्य जितना रूठता है कठिनाइयाँ भी उतनी ही रूठ जाती हैं। कहावत है—'रूठे को मनाना और टूटे को बनाना बुद्धिमानी है।' रूठा हुआ दुःख समझौता कर लेने पर दूर हो जाता है। एक व्यक्ति को देहाती जीवन छोड़कर शहर में रहना पड़ा। शहर की गंदगी, घिच-पिच, मकानों की असुविधा आदि से वह परेशान हो गया। वह बड़ा दुखी था किंतु करता क्या? आखिर जब उसने इन परिस्थितियों से समझौता कर लिया तो वे शिकायतें फिर न रहीं। प्रसन्नतापूर्वक जीवन बिताने लगा। जो कठिनाइयाँ, दुःख और परेशानी का कारण होती हैं, वे ही समझौता कर लेने पर सरल बन जाती हैं। जटिल से जटिल समस्याओं के हल करने का सरल उपाय है उनसे समझौता कर लेना। समझौते का अर्थ यह भी नहीं है कि कठिनाइयों के कारण अपने उद्‌देश्य, आदर्श-लक्ष्य को ही छोड़ दिया जाए, वरन यह है कि उन्हें भी जीवनयात्रा का एक साथी मानकर अपनी यात्रा जारी रखते हुए साथ रहने दिया जाए।

समझौते को, कठिनाइयों को जीवन में स्वीकार करने का तरीका यह है कि अपने आप की तुलना स्वयं से निम्न परिस्थितियों में रहने वाले लोगों से करें। आज हमें चार रोटी मिलकर भी बेचैनी है किंतु दो रोटी मिलने वाले से अपनी तुलना करने पर इस बेचैनी का निवारण हो जाएगा। आज हमें जीवन निर्वाह की पर्याप्त सुविधाएँ-साधन नहीं हैं, किंतु अधिकतर अभावग्रस्त लोगों को तथा असुविधामय जीवन में उत्कर्ष प्राप्त करने वालों को देखें तो हमारी यह शिकायत दूर हो सकती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। इसी तरह अपने से गिरी हुई परिस्थिति के लोगों से स्वयं की तुलना करने पर कठिनाइयाँ, परिस्थितियाँ, सुविधाओं का अभाव सब दूर हो जाते हैं।

कठिनाइयों की कसौटी पर खरे उतरने के लिए, इनसे होने वाली क्षति से बचने के लिए अपने अहंकार को कम करना आवश्यक है। जो वृक्ष नम्र होना जानते हैं, वे बड़े-बड़े झंझावातों में भी अपनी जड़ सहित जमे रहते हैं, पानी की प्रबल धार बेंत का कुछ नहीं बिगाड़ती। किंतु बड़े-बड़े पेड़ जो कठोर होते हैं, अकड़ कर खड़े रहते हैं, वे एक झोंके में ही धराशायी हो जाते हैं। जो मनुष्य नम्रता, निरहंकारिता के सद्‌गुणों से संपन्न होते हैं, जो कष्ट सहिष्णु होते हैं, उनका बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ कष्ट-मुसीबतें भी कुछ नहीं बिगाड़ती। सबसे प्रेम करने वाले, शिकायत न करने वालों को अनेक सहयोगी मिल जाते हैं। कठिनाइयाँ भी उनके साथ सहयोग करती हैं। जो समझौता करना जानते हैं उनकी जटिल समस्याएँ भी सहज ही हल हो जाती हैं।

❑❑

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ० प्र०)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org